छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर, दिसम्बर 2012

कक्षा–12वीं

विषय–अर्थशास्त्र

सेट-1

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 100**

निर्देश : सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

1. प्रत्येक प्रश्न के सामने अंक निर्धारित हैं। 1 अंक वाले प्रश्न का उत्तर आवश्यकतानुसार एक या दो शब्दों में दीजिए। 4 अंक वाले प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में एवं 6 अंक वाले प्रश्नों का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।
2. प्रश्न क्रमांक 1 से 22 तक 1 अंक, प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक 4 अंक, प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक 6 अंक वाले प्रश्न हैं।
3. प्रश्न क्रमांक 23 से 38 तक प्रत्येक प्रश्न में विकल्प का प्रावधान है।

सही विकल्प चुनकर लिखिए

1. भारत में योजना आयोग की स्थापना की गई—

(a) 1950 (b) 1956

(c) 1961 (d) 1966

उत्तर—(a) 1950.

2. योजना आयोग ने प्रति व्यक्ति वास्तविक आय को दुगुना करने का लक्ष्य रखा था—

(a) 15 वर्ष (b) 20 वर्ष

(c) 25 वर्ष (d) 30 वर्ष।

उत्तर—(b) 20 वर्ष।

3. किसी एक वर्ग में आने वाली मदों की कुल संख्या को कहते हैं—

(a) प्रस्तुतीकरण (b) सारणी

(c) वर्ग अन्तराल (d) आवृत्ति।

उत्तर—(d) आवृत्ति।

4. भारत में सड़कों को बाँटा गया है—

(a) 2 (b) 3

(c) 4 (d) 5

उत्तर—(c) 4.

5. भारत एक देश है—

(a) समाजवादी (b) उद्योग प्रधान
(c) पूँजीवादी (d) कृषि प्रधान।

उत्तर—(d) कृषि प्रधान।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

6. भारतीय योजना आयोग के प्रथम अध्यक्ष ..... थे।

उत्तर—पं. जवाहरलाल नेहरू।

7. भारत में प्रति व्यक्ति आय आर्थिक नियोजन के कारण तेजी से ..... है।

उत्तर—बढ़ी।

8. ..... आँकड़े मौलिक होते हैं।

उत्तर—प्राथमिक।

9. अन्तिम उपभोग से अभिप्राय केवल..... से है।

उत्तर—उपयोग।

प्रश्न 10...... से जल विद्युत का उत्पादन होता है।

उत्तर—टरबाईन।

निम्न प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में दीजिए

प्रश्न 11. घरेलू नौकर किस क्षेत्र में आता है, नाम लिखिए।

उत्तर—तृतीयक।

प्रश्न 12. निर्यात से बढ़ने वाले एक स्तर का नाम लिखिए।

उत्तर—आय।

प्रश्न 13. व्यापार शेष और अदृश्य शेष का योग कहलाता है, नाम लिखिए।

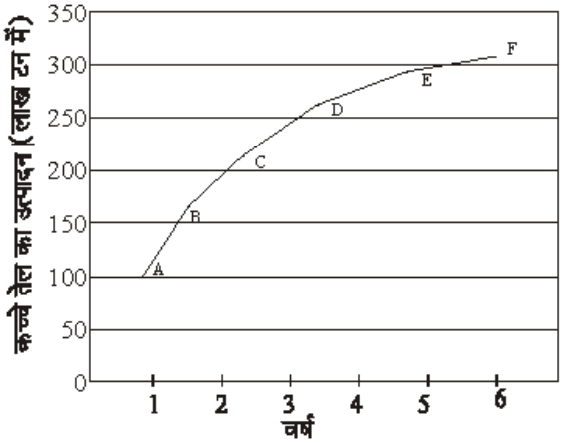

उत्तर—चालू खाता शेष।

प्रश्न 14. घरेलू माँग और घरेलू पूर्ति के अन्तर को पूरा करने वाले तत्व का नाम लिखिए।

उत्तर—आयात।

प्रश्न 15. दूसरे देशों को वस्तुओं का विक्रय कहलाता है, नाम लिखिए।

उत्तर—निर्यात व्यापार।

प्रश्न 16. भारत में व्यापारी उदारीकरण नीति को कब लागू किया गया ?

उत्तर—1990.

प्रश्न 17. किस बाजार नीति से भुगतान शेष की स्थिति में सुधार हुआ है।

उत्तर—नई बाजार नीति।

प्रश्न 18. जीविकोपार्जन कृषि का एक नाम लिखिए।

उत्तर—व्यापारिक कृषि।

प्रश्न 19. हरित क्रान्ति कार्यक्रम कब प्रारम्भ हुआ ?

उत्तर—1967.

प्रश्न 20. छोटे पैमाने के दो उद्योग का नाम लिखिए।

उत्तर—आटामील, जूते चप्पल।

प्रश्न 21. सड़क परिवहन में आने वाले दो यातायात के साधन का नाम लिखिए।

उत्तर—बस, टैक्सी।

प्रश्न 22. सूर्य, हवा ऊर्जा के सीमित या असीमित स्रोत में आते हैं, नाम लिखिए।

उत्तर—असीमित।

निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए

प्रश्न 23. आर्थिक विकास की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर— **आर्थिक विकास की विशेषताएँ**

1. सतत्-प्रक्रिया—आर्थिक विकास एक सतत् प्रक्रिया है। इसमें विकास के विभिन्न अंग एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। विकास की यह प्रक्रिया नवीन उत्पादन तकनीक, बड़े पैमाने के उत्पादन तथा साधनों में परिवर्तन द्वारा दीर्घकाल में राष्ट्रीय आय की वृद्धि में सहायक है।

2. राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि—वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि उसके आर्थिक विकास का सूचक है। राष्ट्रीय आय की तुलना में जनसंख्या में वृद्धि कम होने पर प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है।

3. दीर्घकालीन वृद्धि—आर्थिक विकास उसी दशा में माना जाता है जबकि प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि समय विशेष से सम्बन्धित न होकर दीर्घकाल तक निरन्तर होती है।

4. जीवन स्तर में वृद्धि—यदि राष्ट्रीय आय का समान वितरण होता है तो तीव्र आर्थिक विकास होता है।

अथवा

प्रश्न—भारतीय अर्थव्यवस्था की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ—

1. कृषि पर निर्भरता—भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है। कुल राष्ट्रीय आय का 30% कृषि से प्राप्त होता है। यहाँ आधुनिक एवं पुरानी दोनों तकनीकों से खेती की जाती है।

2. तकनीकी का पिछड़ापन—भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राय: सभी उद्योगों में उत्पादन की पुरानी तकनीक का प्रयोग किया जाता है। उन्नत तकनीकों का प्रयोग केवल कुछ उद्योगों में किया जाता है।

4. जनसंख्या की ऊँची वृद्धि दर—भारत में जनसंख्या वृद्धि विस्फोटक स्थिति में है। जनसंख्या की अधिकता के कारण संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव पड़ा है। अत: राष्ट्रीय आय में वृद्धि की तुलना में प्रति व्यक्ति आय कम है।

4. निरक्षरता—भारत में निरक्षरता का प्रतिशत बहुत अधिक है। महिलाओं में यह दर और अधिक है।

प्रश्न 24. व्यक्तिगत तथा बाजार मांग तालिका में चार अन्तर लिखिए।

उत्तर—व्यक्तिगत तथा बाजार मांग तालिका में चार अन्तर—

1. बाजार मांग तालिका व्यक्तिगत मांग तालिका की अपेक्षा अधिक समतल तथा सतत् होती है।

2. व्यक्तिगत मांग तालिका का व्यावहारिक महत्व अधिक नहीं होता है, किन्तु बाजार मांग तालिका का मूल्य नीति, करारोपण तथा आर्थिक नीति के निर्धारण पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

3. व्यक्तिगत मांग तालिका बनाना सरल है किन्तु बाजार मांग तालिका बनाना कठिन है।

अथवा

प्रश्न—व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में चार अन्तर लिखिए।

उत्तर— व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर

क्र.	अन्तर का आधार	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1.	विषय सामग्री	इसमें व्यक्तिगत इकाईयों का अध्ययन किया जाता है।	इसमें सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की समग्र इकाई का अध्ययन किया जाता है।
2.	तेजी एवं मंदी	इसमें व्यक्तिगत फर्म, उद्योग या व्यापारिक इकाई में तेजी व मंदी की विवेचना की जाती है।	इसमें सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की आर्थिक तेजी एवं मंदी का स्पष्टीकरण किया जाता है।
3.	सहायता	उपभोक्ता या फर्म को सर्वोत्तम बिन्दु तक पहुँचाने में व्यष्टि अर्थशास्त्र सहायता पहुँचाता है।	सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को सर्वोत्तम बिन्दु तक पहुँचाने में समष्टि अर्थशास्त्र मदद करता है।
4.	सीमा	इसका क्षेत्र सीमान्त विश्लेषण आदि पर आधारित नियमों तक सीमित है।	इसका क्षेत्र राष्ट्रीय आय, पूर्ण रोजगार, राजस्व आदि सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित समस्याओं के विश्लेषण से व्यापक है।

प्रश्न 25. मुद्रा पूर्ति को प्रभावित करने वाले चार तत्वों को लिखकर संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर— मुद्रा पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व

1. विधित आरक्षित निधि अनुपात—यह अनुपात जितना अधिक होता है बैंकों के ऋण देने की क्षमता उतनी कम होती है। रिजर्व बैंक जब मुद्रा की पूर्ति को कम करना चाहता है तो यह अनुपात बढ़ा देता है इसके विपरीत पूर्ति को अधिक करना चाहता है तो अनुपात घटा देता है।

2. खुले बाजार के क्रियाकलाप—जमाकर्ताओं के माध्यम से भी बैंकों की ऋण देने या जमाएँ उत्पन्न करने की क्षमता पर नियंत्रण रखा जा सकता है। ऐसा करने के लिए रिजर्व बैंक प्रतिभूतियां अर्थात् ऋण-पत्र जनता को बेचता है।

3. बैंक दर—बैंक दर भी मुद्रा की पूर्ति को प्रभावित करता है। जब उत्पादकों को पैसे की आवश्यकता होती है तो वे बैंकों से ऋण लेते हैं जब वाणिज्य बैंकों को पैसे की आवश्यकता होती है तो वे केन्द्रीय बैंक से ऋण लेते हैं। केन्द्रीय बैंक इस पर ब्याज वसूल करता है। इसे तकनीकी भाषा में ब्याज दर कहते हैं। अत: बैंक दर, केन्द्रीय बैंकों की ब्याज दर है।

अथवा

प्रश्न—वाणिज्य बैंकों के ऋण देने की प्रक्रिया लिखिए।

उत्तर—देश में मुद्रा संग्रह के सन्दर्भ में वाणिज्य बैंकों द्वरा ऋण देने की प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसका सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है लोगों और संस्थाओं द्वारा अपने खातों में पैसा जमा कराना। दूसरा स्रोत है लोगों, संस्थाओं और रिजर्व बैंक से उधार लेना। जमाकर्त्ताओं की राशि पर ब्याज और सेवाओं पर होने वाले व्यय को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि बैंक आय कमाएँ। बैंक ऐसे जमाकर्त्ताओं द्वारा जमा की गई राशि को उधार देकर और उससे ब्याज कमाकर कर सकता है।

खाताधारी बैंक में निरन्तर पैसा जमा करवाते रहता है। इस तरह बैंक में निरन्तर रुपया आता और जाता रहता है। बैंक को अनुभव से पता चलता रहता है कि उसे जमा राशि का 20 प्रतिशत तैयार रखने से काम चल जायेगा तो वह शेष 80 प्रतिशत जमा राशि को उधार देकर ब्याज कमा सकता है।

भारतीय रिजर्व बैंक हस्तक्षेप करता है, वह बैंकों की ऋण देने की क्षमता पर नियंत्रण रखने के लिए कानूनी तौर पर यह अनिवार्य कर देता है कि उन्हें जमा राशि का एक न्यूनतम प्रतिशत सदैव नकद रूप में रखना होगा। वाणिज्य बैंक यह निधि दो रूपों में रखते हैं, एक भाग अपने पास और दूसरा भाग केन्द्रीय बैंक अर्थात् भारतीय रिजर्व बैंक के पास। जमाओं में से ये दोनों आरक्षित निधि घटाने पर जो राशि शेष बचती है, बैंक उतने तक का ही ऋण दे सकता है। इस प्रकार विधित आरक्षित निधि वाणिज्य बैंकों की ऋण देने की क्षमता को निर्धारित करती है।

प्रश्न 26. बजटीय नीति के चार प्रमुख उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—बजटीय नीति के प्रमुख उद्देश्य—

1. देश को प्रभावी शासन देना—इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सरकार पुलिस, सेना, विधायिकाओं, न्यायालयों, सरकारी विभागों आदि पर व्यय करती है।

2. मूलभूत सुविधाएँ प्रदान करना—इसके लिए सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई, जल व बिजली आपूर्ति, परिवहन, डाक व दूर संचार सेवाएँ, सड़क, पुल पार्क आदि पर व्यय करती है।

3. आय की असमानताएँ दूर करना—सरकार अमीर वर्ग पर कर लगाकर और गरीब वर्ग पर व्यय करके आय की असमानताएँ कम कर सकते हैं।

4. रोजगार के अवसर प्रदान करना—रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए सरकार सार्वजनिक उद्योग खोलती है तथा रोजगार को प्रोत्साहन देने के लिए निजी उद्योगों को अनुदान देती है।

अथवा

प्रश्न—बजट घाटा पूरा करने के दो वित्तीय स्रोतों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—बजट घाटा पूरा करने के वित्तीय स्रोत निम्नलिखित हैं—

1. जनता और विदेशी सरकारों से ऋण—बजटरी घाटे को पूरा करने के लिए सरकार जनता से ऋण लेना अधिक पसन्द करती है। क्योंकि अन्य स्रोतों से व्ययों को पूरा करने पर मुद्रा पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। जनता से ऋण लेने पर देश में कुल मुद्रा पूर्ति पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् इसका शून्य प्रभाव होता है। जनता के पास मुद्रा पूर्ति कम हो जाती है और सरकार के पास यह बढ़ जाती है।

2. भारतीय रिजर्व बैंक में रखे हुए नकद शेष को निकालना—बजट घाटे को पूरा करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक में रखे नकद शेष को निकालने या उससे ऋण लेने पर देश में मुद्रा की पूर्ति बढ़ जाती है। भारतीय रिजर्व बैंक से बाहर आने वाली मुद्रा, मुद्रा पूर्ति को बढ़ाती है। इससे देश में कीमतें बढ़ सकती हैं और अर्थव्यवस्था में कई अन्य समस्याएँ जन्म ले सकती हैं। अत: और कोई विकल्प न होने पर सरकार ये स्रोत प्रयोग में लाती है।

प्रश्न 27. भारतीय अर्थव्यवस्था की चार समस्याएँ लिखिए।

उत्तर—भारतीय अर्थव्यवस्था की समस्याएँ—

1. मुद्रा स्फीति का दबाव—आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में तेजी से वृद्धि हो रही थी। श्रमिक वर्ग के रहन-सहन का व्यय निरन्तर बढ़ रहा था। श्रमिक अधिक मजदूरी की मांग कर रहे थे। फलत: उत्पादन लागतें बढ़ रही थीं और ऊँची लागत के कारण देश-विदेश में मांग नहीं बढ़ पा रही थी। इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था में स्फीति का दबाव निरन्तर बना हुआ था।

2. वित्त का अभाव—बिजली, इस्पात, परिवहन, संचार जैसे क्षेत्र वित्त के अभाव में समुचित विकास नहीं पा रहे थे।

3. बेरोजगारी—जिस अनुपात में बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि हो रही थी, उस अनुपात में रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं हो पा रहे थे।

4. विश्व व्यापार के अनुपात में कमी—भारत का विदेशी व्यापार यूरोप के समाजवादी देशों एवं सोवियत संघ के साथ धीरे-धीरे बढ़ रहा था किन्तु सत्ता परिवर्तन के कारण इनसे व्यापार कम हो गया। जिससे आर्थिक विकास एवं वृद्धि सम्भव नहीं हो पा रहा था।

अथवा

प्रश्न—विदेशी व्यापार नीति में किये गये चार नीतिगत सुधार लिखिए।

उत्तर—विदेशी व्यापार में नीतिगत सुधार निम्नलिखित हैं—

1. आयात लाइसेंस का उदारीकरण—आयात लाइसेंस नीति को नई व्यापार नीति में उदार बनाया गया। नकारात्मक सूची को छोड़कर शेष सभी वस्तुओं को आयात लाइसेंस से मुक्त कर दिया गया।

2. सीमा शुल्क के ढांचे में सुधार—नई व्यापार नीति के अन्तर्गत आयात सीमा शुल्क की दरों में निरन्तर कमी की जा रही है। वर्ष 1997 तक आयात शुल्क की अधिकतम दर लगभग आधी जबकि औसत शुल्क की दर एक चौथाई रह गई थी।

3. सार्वजनिक क्षेत्र की व्यापार एजेंसियों की भूमिका में कमी—नई व्यापार नीति में सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयाँ; जैसे—राज्य व्यापार निगम भारतीय खनिज एवं धातु निगम के माध्यमों

से आयात-निर्यात मदों में कमी की गई इन संस्थाओं का एकाधिकार लगभग समाप्त हो गया है।

4. विनिमय दर प्रबन्धन में सुधार—विनिमय दर में सुधार के लिए पहला कदम सन् 1991 में उठाया गया। 1 और 3 जुलाई को शीघ्र ही दो किश्तों में रुपये का अवमूल्यन किया गया। इससे निर्यात व विदेशी विनिमय की सम्भावनाओं में वृद्धि हुई।

प्रश्न 28. एक देश में कच्चे तेल का उत्पादन निम्न है—

वर्ष	उत्पादन (लाख टन में)
1990-91	106
1991-92	162
1992-93	211
1993-94	260
1994-95	290
1995-96	302

उपर्युक्त आँकड़ों के आधार पर काल श्रेणी रेखाचित्र बनाइए।

उत्तर—काल श्रेणी रेखाचित्र—

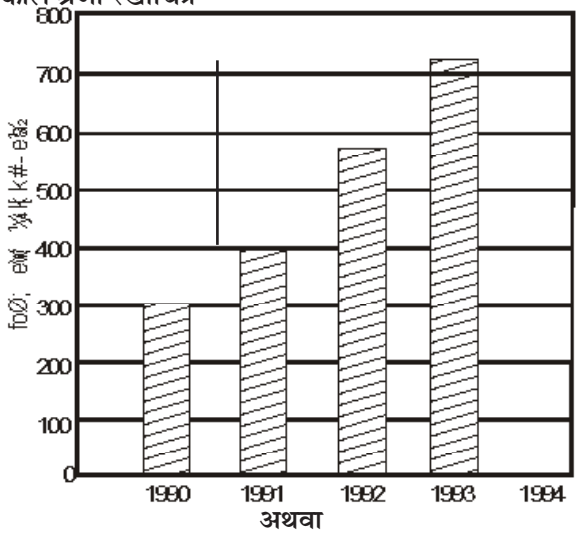

अथवा

प्रश्न— 1990-93 में लघु उद्योगों का विक्रय मूल्य निम्न है—

वर्ष	विक्रय मूल्य (लाख रुपये में);
1990	300
1991	400
1992	560
1993	720

उपर्युक्त आँकड़ों के आधार पर सरल दण्ड रेखाचित्र बनाइये।

उत्तर—सरल दण्ड रेखाचित्र—

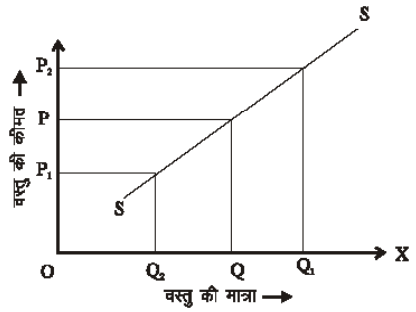

सरल दण्ड रेखाचित्र

प्रश्न 29. चार साधन आय का संक्षेप में अर्थ लिखिए।

उत्तर—चार साधन आय—

1. कर्मचारियों का पारिश्रमिक—कर्मचारियों के पारिश्रमिक में उनके कार्यों के बदले में प्रदान किये गये मौद्रिक और गैर-मौद्रिक लाभ दोनों शामिल किये जाते हैं।

2. किराया—भूमि को वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में प्रयोग करने के बदले में भूमि के स्वामी को मिलने वाली आय, किराया कहलाती है।

3. ब्याज—उत्पादन इकाइयों द्वारा ऋण प्राप्ति पर किया गया भुगतान ब्याज कहलाता है। राष्ट्रीय आय के अनुमानों में उत्पादन इकाईयों द्वारा निवेश प्राप्ति पर दिये गये ऋण का ब्याज ही साधन आय माना जाता है। उपभोग व्यय के लिए उपभोक्ताओं को दिये गये ऋण पर ब्याज साधन आय नहीं माना जाता है।

4. लाभ—उत्पादन इकाई में साहसी को अपने कार्यों के बदले में लाभ मिलता है। कर्मचारियों को पारिश्रमिक, किराया और ब्याज का भुगतान करने के पश्चात् जो बच जाता है, वह लाभ कहलाता है।

अथवा

प्रश्न—मिश्रित आय का अर्थ लिखकर, इस अवधारणा की आवश्यकता को समझाइये।

उत्तर—मिश्रित आय का अर्थ—एक अर्थव्यवस्था में ऐसे भी उत्पादक होते हैं जो स्वतंत्र रूप से उत्पादन का कार्य करते हैं। ये स्वयं पूँजी लगाते हैं, श्रम, भूमि की व्यवस्था करते हैं तथा व्यवसाय के प्रबन्ध का कार्य भी करते हैं। अत: ऐसे लोगों को अपने स्वयं के रोजगार से जो आय प्राप्त होती है, उसमें भूमि का किराया, पूँजी का ब्याज, प्रबन्धक का वेतन एवं लाभ को अलग-अलग ज्ञात करना कठिन होता है। अत: इन सभी प्रकार की आय को मिश्रित आय कहा जाता है।

आवश्यकता—इस आय की अवधारणा की आवश्यकता हमें राष्ट्रीय आय ज्ञात करने के लिए होती है तथा साधनों को या पेशेवरों को कितनी आय प्राप्त हो रही है, क्योंकि राष्ट्रीय आय में साधनों की आय के भाग को भी शामिल किया जाता है।

प्रश्न 30. भारत में विदेशी व्यापार नीति में सुधार के चार प्रभाव लिखिए।

उत्तर—विदेशी व्यापार नीति में सुधार के प्रभाव—

1. वस्तुओं के आयात-निर्यात का प्रभाव—इस नीति का निर्यात व्यापार पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है। 1995-96 के 6 माह पूर्व निर्यात में लगभग 29·3% वृद्धि हुई है।

2. अदृश्य मदों पर प्रभाव—अदृश्य मदों सेवाओं का निर्यात, आयात और चालू प्रेषण में

आता हैं। सभी में वृद्धि हुई किन्तु विदेशी प्रेषण में सबसे अधिक एवं विशेष वृद्धि हुई, ऐसा बाजार निर्धारित दर में प्रोत्साहन के कारण था।

3. पूंजी खाते का प्रभाव—पूँजी खाते में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। 1994-95 तक बढ़कर यह 480 करोड़ डॉलर हो गया था।

4. चालू खाते के शेष पर प्रभाव—निर्यात प्राप्तियां बढ़ जाने से चालू खाते के शेष में महत्वपूर्ण सुधार आया। इसका घाटा जो 1991-92 में 968 करोड़ अमरीकी डालर था 1994-95 में घटकर 232 करोड़ अमरीकी डालर हो गया।

अथवा

प्रश्न—भारतीय व्यापार नीति के आयात नियंत्रण के चार उपाय लिखिए।

उत्तर—आयात नियंत्रण के उपाय—

1. आयात लाईसेंस—आयात लाईसेंस एक कठिन प्रक्रिया थी और आयात के लिए लाइसेंस अनिवार्य था।

2. सीमा शुल्क—आयात पर अधिक मात्रा में सीमा शुल्क लगाया गया ताकि विदेशी वस्तुएँ देश में महंगी हों और लोग इसे खरीदने में रुचि लें।

3. आयात कोटा—आयात के लिए एक सीमा निर्धारित की गई जिससे अधिक आयात नहीं किया जा सकता था।

4. आयात पर प्रतिबन्ध—गैर-आवश्यक वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

प्रश्न 31. भारत में जनसंख्या तीव्र वृद्धि दर के कारण उत्पन्न चार समस्याओं को लिखिए।

उत्तर—जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न समस्याएँ—

1. आर्थिक वृद्धि में बाधक—यह देश की आर्थिक वृद्धि में बाधक है और जो भी आर्थिक संवृद्धि होती है वह पूरी तरह से आय के स्तर में वृद्धि को नहीं दिखाती है। प्रति व्यक्ति आय की दर राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर से कम रही है।

2. आय, बचत तथा विनियोग दर में कमी—जनसंख्या वृद्धि के कारण लोगों की आय कम हो जाती है जिसका प्रतिकूल प्रभाव बचत की दर पर पड़ता है।

3. अनिवार्य वस्तुओं एवं सेवाओं का अभाव—जनसंख्या के तेजी से बढ़ने के कारण भोजन, कपड़े, आवास, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधा जैसे उपभोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक संसाधनों का उपयोग करना पड़ता है।

4. बेरोजगारी की समस्या में वृद्धि—इससे बेरोजगारी और गरीबी जैसी समस्याएँ गम्भीर रूप धारण कर लेती हैं, जिससे राजनीतिक व सामाजिक तनाव भी बढ़ता है।

अथवा

प्रश्न—भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर को रोकने के उपाय लिखिए।

उत्तर—जनसंख्या नियन्त्रण के प्रभाव—

1. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार नियोजन व कल्याण केन्द्र स्था"त करके परिवार नियोजन के सम्बन्ध में शिक्षा प्रशिक्षण जैसी सुविधा व अन्य सेवाएँ प्रदान करते हैं।

2. विवाह के समय स्त्री और पुरुष की आयु क्रमश: 18 वर्ष एवं 21 वर्ष की उम्र निश्चित की गयी।

3. जन्म दर को घटाने के लिए बहुत से तरीके अपनाये गए हैं; जैसे—पुरुषों के लिए निरोध,

स्त्री के लिए लूप व गोलियां, बंधीकरण आदि।

4. लोगों को गर्भनिरोधक उपाय अपनाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन दिये जाते हैं; जैसे नकद इनाम व वेतन वृद्धि आदि।

नोट—निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 32. अर्थव्यवस्था की तीन मूलभूत क्रियाओं की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर—अर्थव्यवस्था की मूलभूत क्रियाएँ—मूलभूत क्रियाओं से तात्पर्य उन प्रक्रियाओं से है जिसके बिना अर्थशास्त्र का अस्तित्व नहीं हो सकता है।''

ये क्रियाएँ निम्नलिखित हैं—

1. उत्पादन—अर्थव्यवस्था में उत्पादन से तात्पर्य न केवल वस्तुओं के निर्माण से लिया जाता है बल्कि सेवाओं के उत्पादन से भी लिया जाता है। सभी के लिए वस्तु के साथ सेवा भी अनिवार्य है। उत्पादन-प्रक्रिया का सम्बन्ध एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं को प्रदान करने तक है।

2. उपभोग—उपभोग वह क्रिया है जिसका सम्बन्ध मानवीय आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से संतुष्टि के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं के उपभोग करने से है। यह अर्थशास्त्र का महत्वपूर्ण विभाग है। उपभोग ही आर्थिक क्रियाओं का आदि एवं अन्त है।

3. निवेश—निवेश से तात्पर्य उत्पादन कार्य को निरन्तर बाधा रहित चलाने के लिए स्थाई एवं अस्थाई सम्पत्ति पर धन का लगाना है। उत्पादन कार्य में निवेश किया जाता है। अत: उत्पादित माल के शेष स्कंध में भी पूँजी का निवेश रहता है।

अथवा

प्रश्न—आर्थिक क्रियाओं के बीच पारस्परिक तीन सम्बन्ध लिखिए।

उत्तर—आर्थिक क्रियाओं का उत्पादन, उपभोग एवं निवेश में परस्पर सम्बन्ध होते हैं, जिसका वर्णन निम्नलिखित है—

1. उत्पादन, उपभोग एवं निवेश का स्रोत है। उत्पादन के अभाव में न तो उपभोग होता है और न ही निवेश।

2. उपभोग, उत्पादन एवं निवेश को प्रेरित करता है। यदि उपभोग की आवश्यकता न हो तो उत्पादन की आवश्यकता नहीं होगी, उत्पादन नहीं करना हो तो निवेश भी नहीं करना होगा।

3. निवेश उत्पादन के स्तर को निर्धारित करता है। जितना अधिक निवेश होगा, उतना अधिाक उत्पादन होगा।

4. बचत निवेश के वित्त प्रबन्ध का मुख्य स्रोत है। अधिक बचत का अर्थ अधिक निवेश अधिक निवेश का अर्थ अधिक उत्पादन, जिसका अर्थ अधिक उपभोग व अधिक निवेश।

प्रश्न 33. पूर्ति वक्र से क्या आशय है ? रेखाचित्र द्वारा समझाइये।

उत्तर—पूर्ति वक्र से आशय—जब पूर्ति तालिका को रेखाचित्र द्वारा व्यक्त किया जाता है, तो उसे पूर्ति-चक्र कहते हैं। यह पूर्ति वक्र दो प्रकार का होता है—

(i) व्यक्तिगत पूर्ति वक्र, (ii) बाजार पूर्ति वक्र।

व्यक्तिगत पूर्ति की तालिका के आधार पर बनाया गया वक्र 'व्यक्तिगत पूर्ति वक्र, कहलाता है जबकि बाजार पूर्ति की तालिका के आधार पर बनाया गया वक्र 'बाजार पूर्ति वक्र' कहलाता है।

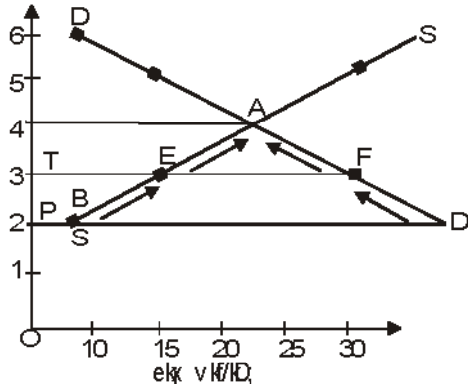

उपरोक्त रेखाचित्र में OX आधार रेखा पर वस्तु की मात्रा तथा OY लम्ब रेखा पर वस्तु की कीमत है। SS पूर्ति वक्र है, जो दायीं ओर ऊपर चढ़ रहा है जिसका अर्थ है पूर्ति की जाने वाली मात्रा तथा कीमत में सीधा सम्बन्ध होता है। अर्थात् कीमत के बढ़ने पर पूर्ति की जाने वाली मात्रा बढ़ती है तथा कीमत के घटने पर पूर्ति की जाने वाली मात्रा घटती है।

जब वस्तु की कीमत OP है तब वस्तु की पूर्ति OQ हो जाती है तो पूर्ति की कीमत बढ़कर OP_1 हो जाती है, तो पूर्ति बढ़कर OQ_1 हो जाती है। इसके विपरीत, यदि वस्तु को कीमत घटाकर OP_2 हो जाती है, तो पूर्ति घटकर OQ_2 हो जाती है।

अथवा

प्रश्न—मांग आधिक्य से क्या आशय है ? रेखाचित्र द्वारा इसका कीमत पर पड़ने वाला प्रभाव समझाइये।

उत्तर—माँग आधिक्य—किसी दी हुई कीमत पर वस्तु की माँगी हुई मात्रा, उसकी पूर्ति की अपेक्षा अधिक है तो इसे माँग आधिक्य कहा जाता है।

माँग आधिक्य का वस्तु की कीमत पर प्रभाव—

(1) वस्तु की कीमत क्रेताओं में प्रतिस्पर्धा के कारण बढ़ने लगती है।

(2) जैसे-जैसे कीमत बढ़ती है, माँग घटती है, क्योंकि कीमत बढ़ने पर क्रेता कम मात्रा में खरीदते हैं।

(3) जैसे-जैसे कीमत बढ़ती है, पूर्ति बढ़ती है, क्योंकि कीमत बढ़ने पर विक्रेता अधिक मात्रा में बेचते हैं।

(4) वस्तु की कीमत बढ़ने से माँग का संकुचन और पूर्ति का विस्तार होता है और यह प्रक्रिया तब चलती रहती है जब तक कीमत, माँग और पूर्ति के बराबर न हो जाए।

(5) यही सन्तुलन कीमत है जो सन्तुलन मात्रा भी निर्धारित करती है।

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण—

$$\bar{X} = A + \frac{\Sigma fdx}{N}$$

उपर्युक्त चित्र में OX अक्ष पर वस्तु की माँग को तथा OY अक्ष पर वस्तु की कीमत को दर्शाया गया है। जब वस्तु की कीमत कम रहती है तो ऐसी दशा में माँग अधिक होती है। अर्थात् माँग की तुलना में पूर्ति कम रहती है। इसे DD वक्र तथा SS वक्र द्वारा दर्शाया गया है। अत: माँग

आधिक्य में एक बिन्दु के बाद कीमत घटने लगती है इस कारण माँग में कमी आने लगती है और माँग आधिक्य वस्तु की कीमत को बढ़ाता है।

प्रश्न 34. दी गई सूचनाओं का प्रयोग करके अप्रत्यक्ष विधि द्वारा समान्तर माध्य ज्ञात कीजिए।

प्राप्तांक (x)	आवृत्ति (f)
4	6
5	3
6	2
7	3
8	4
9	2

हल—अप्रत्यक्ष विधि से समान्तर माध्य की गणना—

प्राप्तांक	आवृत्ति (f)	कल्पित माध्य A – 6 = dx	आवृत्ति व विचलनों का गुणनफल (f.dx)
4	6	–2	–12
5	3	–1	–3
6	2	0	0
7	3	1	3
8	4	2	8
9	2	3	6
	$\Sigma f = 20$		$\Sigma fdx = 2$

$$\bar{X} = 6 + \frac{2}{20}$$

$$\bar{X} = 6 + 0.1 \quad X :$$

उत्तर

$$= \frac{\Sigma P_1}{\Sigma P_2} \times 100 \qquad = 6.1$$

अथवा

प्रश्न—वर्ष 1995 में A, B, C वस्तुओं की कीमतें क्रमशः 50, 07 और 03 रु. थीं। वर्ष 1996 में वह बढ़कर 52, 08 और 05 रुपये हो गई। सरल समूही विधि के द्वारा बताइये कि कीमत में औसत वृद्धि कितनी हुई ?

हल :

वस्तुएँ	1995 (आ. व.) की कीमतें P_0	1996 की कीमतें P_1
		P_1
A	50	52
B	07	08
C	03	05
योग	$\Sigma P_0 = 60$	$\Sigma p_1 = 65$

(आधार वर्ष 1995) 1996 का मूल्य सूचकांक

$$P_{01} = \frac{\frac{65}{60}\times 100}{\frac{\text{स्त्रियों की कुल संख्या}}{\text{पुरुषो की कुल संख्या}} \times 100} = 108{\cdot}33$$ **उत्तर**

इस प्रकार 1996 का मूल्य सूचकांक (आधार वर्ष 1995) 108·33 है। इसलिए एक वर्ष में हुई कीमत वृद्धि = 108·33 - 100 = 8·33% होगा।

प्रश्न 35. देश के राष्ट्रीय आय अनुमान के कोई चार उपयोग लिखिए।

उत्तर—देश के राष्ट्रीय आय अनुमानों के चार उपयोग निम्नलिखित हैं—

1. आर्थिक संवृद्धि के माप के रूप में—स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय के अनुमान देश की आर्थिक संवृद्धि के बारे में बताते हैं। स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर देश की आर्थिक संवृद्धि दर का एक माप है।

2. प्रति व्यक्ति आय के अनुमान में सहायक—राष्ट्रीय आय को देश की कुल जनसंख्या से भाग देने पर प्रति व्यक्ति आय ज्ञात हो जाती है।

3. विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों की प्रगति की समीक्षा में सहायक—देश की उत्पादन इकाइयों को तीन क्षेत्रों में बाँटा गया है—प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक। प्राथमिक क्षेत्रों में प्राकृतिक साधन पर उत्पादन करने वाली उत्पादन इकाइयों को शामिल किया जाता है; जैसे—मछली पकड़ना, कृषि, उत्खनन आदि। द्वितीयक क्षेत्र में वस्तुओं के निर्माण को रखा गया है। तृतीयक क्षेत्र सेवाओं का उत्पादन करता है; जैसे—परिवहन, बैंकिंग, बीमा, सरकारी आदि। ये क्षेत्र आय उत्पन्न करते हैं।

4. आय के वितरण में असमानताएँ मापने में सहायक—सभी व्यक्तियों की आय एक जैसी नहीं होती है। कुछ अधिक आय और कुछ कम आय अर्जित करते हैं। लोगों के बीच राष्ट्रीय आय असमान रूप से बंट जाती है। आयु, लिंग, योग्यताएँ, कार्य का अनुभव, शारीरिक शक्ति, जोखिम भरे काम करने को तैयार रहना आदि कुछ ऐसी बातें हैं जिनके कारण आय वितरण में कुछ असमानताएँ होती हैं।

अथवा

प्रश्न—राष्ट्रीय आय विभिन्न देशों के मध्य तुलना करने में सहायक है, व्याख्या कीजिए।

उत्तर—राष्ट्रीय आय के आंकड़ों के आधार पर हम विभिन्न राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था की तुलना कर सकते हैं। इससे हमें यह जानकारी होती है कि कौन-सा राष्ट्र अमीर है तथा कौन-सा राष्ट्र गरीब या अन्य देशों की तुलना में किसी देश में कृषि या कोई अन्य व्यवसाय कितना महत्वपूर्ण है। हम विभिन्न देशों के उपभोग और निवेश व्ययों के स्तरों और उनके स्वरूप की तुलना कर सकते हैं। प्रति व्यक्ति आय के आधार पर विभिन्न देशों के जीवन स्तर को ज्ञात कर सकते हैं।

प्रश्न 36. आयु एवं लिंग के आधार पर भारत की जनसंख्या की संरचना की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—1. आयु के आधार पर जनसंख्या की संरचना—आयु के आधार पर जनसंख्या की

संरचना का अर्थ है, विभिन्न आयु वर्गों की जनसंख्या का कुल जनसंख्या में अनुपात। जनसंख्या को तीन आयु वर्गों में बांटा गया है—(अ) 15 वर्ष से कम आयु (ब) 15 से 59 वर्ष की आयु (स) 60 वर्ष और उससे अधिक की आयु। 15 से 59 वर्ष की उम्र वालों को श्रम योग्य माना जाता है। अन्य दो वर्गों यानि 15 वर्ष से कम एवं 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग को आश्रित जनसंख्या माना जाता है।

1992 में भारत में 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों का अनुपात 35·5% था। 60 वर्ष व उससे अधिक आयु वर्ग का अनुपात 6·5% और 6·65% प्रतिशत के आस-पास रहा।

2. लिंग पर आधारित संरचना—लिंग पर आधारित जनसंख्या की संरचना का अर्थ है, कुल जनसंख्या में पुरुषों व स्त्रियों की संख्या। इसे अनुपात के रूप में व्यक्त करते हैं। प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या को लिंग अनुपात कहते हैं।

सूत्र—लिंगानुपात = ---------

भारत में पुरुषों की संख्या स्त्रियों की संख्या से अधिक है और पुरुषों का अनुपात बढ़ता जा रहा है। वर्ष 2001 के अनुसार स्त्री-पुरुष अनुपात 989 प्रति हजार था।

अथवा

प्रश्न—भारत की अन्तरप्रदेशीय विभिन्नताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भारत की अन्तरप्रदेशीय विभिन्नताएँ—भारत की जनसंख्या के लगभग सभी पहलुओं में बहुत अधिक अन्तरप्रदेशीय विभिन्नताएँ हैं। 1954 में केरल राज्य में जन्म दर 17·3 और तमिलनाडु में 19 थी। जबकि उत्तर प्रदेश में 35·4, राजस्थान में 33·4 और बिहार में 32·5 थी। 1994 में केरल में मृत्यु दर राष्ट्रीय औसत वृद्धि दर से कम थी। ये राज्य हैं—गुजरात, कर्नाटक, पंजाब, उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, गोवा, तमिलनाडु और केरल। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र में जनसंख्या की वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत से बहुत ऊँची थी। केरल ही मात्र एक ऐसा राज्य है जहाँ लिंग अनुपात 1000 से अधिक है। 1991 की जनगणना के अनुसार केरल में लिंगानुपात 1036 था जबकि हरियाणा, उत्तर प्रदेश और पंजाब में लिंगानुपात 900 से कम था।

भारत के विभिन्न राज्यों में साक्षरता के स्तर में भी बहुत भिन्नताएँ हैं। पुरुषों में साक्षरता दर केरल में 95 प्रतिशत है जबकि बिहार, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में लगभग 55% है। स्त्रियों की साक्षरता दर में विभिन्नताएँ और भी अधिक हैं। जनसंख्या के घनत्व में भी अन्तर-प्रदेशीय विभिन्नताएँ बहुत अधिक हैं। दिल्ली में जनसंख्या का घनत्व 6319 है जबकि अरुणाचल प्रदेश में 10 है। केरल प्रत्याशित आयु 70 वर्ष है जबकि मध्य प्रदेश में 52·2 वर्ष है।

प्रश्न 37. उद्योगों की कृषि पर निर्भरता के चार कारण लिखिए।

उत्तर—उद्योगों की कृषि पर निर्भरता—

1. उद्योगों को कच्चा माल—कृषि से उद्योगों को कच्चे माल की प्राप्ति होती है; जैसे—कपास, नारियल, गन्ना, जूट आदि।

2. कृषि में लगी जनसंख्या औद्योगिक वस्तुओं की मांग का स्रोत—भोजन मनुष्य की

प्रथम अनिवार्य आवश्यकता है। ये पूरी हो जाती है तो अन्य वस्तुओं की मांग होती है; जैसे—कपड़ा, मकान, साइकिल, टी. वी. ये सभी वस्तुएँ औद्योगिक क्षेत्र में बनती हैं।

3. औद्योगिक क्षेत्र के लिए श्रम का स्रोत—जब देश अल्पविकसित होता है तो वह कृषि प्रधान होता है। जब देश का विकास होता है तो कृषि में श्रम की आवश्यकता कम होती है। जब अर्थव्यवस्था का विकास होता है तो आय बढ़ने लगती है तो औद्योगिक वस्तुओं की मांग में तेजी आती है।

4. औद्योगिक क्षेत्र के लिए धन का स्रोत—कृषि क्षेत्र में जितनी आय में वृद्धि होगी, बचत उतनी ही बढ़ेगी एवं औद्योगिक क्षेत्र का विकास कृषि क्षेत्र के विकास से जुड़ा है।

अथवा

प्रश्न—कृषि का उद्योगों पर निर्भरता के चार कारण लिखिए।

उत्तर—कृषि का उद्योगों पर निर्भरता निम्नलिखित कारणों से है—

1. कृषि को उन्नत बीज—उन्नत बीजों को तैयार करने के लिए अनुसंधान निरन्तर चल रहे हैं, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है।

2. कृषि को उर्वरक प्रदान करना—भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए किसान इसके विकल्प के तौर पर रासायनिक खाद का प्रयोग करने लगे हैं। रसायन उद्योग उर्वरक की मांग को पूरा करते हैं।

3. सिंचाई—देश में कृषि कार्य हेतु विकल्प विकसित किये गये, जैसे—सिंचाई हेतु तालाब, कुएँ, नहर, बांध आदि की आवश्यकता। पम्प सेट चलाने हेतु बिजली का उत्पादन किया जाता है।

4. कृषि औजारों का निर्माण—उद्योगों के द्वारा कृषि कार्य में प्रयुक्त किये जाने वाले विभिन्न औजारों, ट्रेक्टर, ट्रेलर, हार्वेस्टर, रिपर आदि का निर्माण किया जाता है।

प्रश्न 38. औद्योगिक बैंक एवं वाणिज्यिक बैंक में चार अन्तर लिखिए।

उत्तर— औद्योगिक एवं वाणिज्यिक बैंकों में अन्तर

औद्योगिक बैंक	वाणिज्यिक बैंक
1. इन बैंकों में पैसा जमा नहीं कर सकते हैं।	1. इन बैंकों में पैसा जमा किया जा सकता है।
2. ये बैंक मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन ऋण प्रदान करते हैं।	2. ये बैंक प्रायः अल्पकालीन ऋण प्रदान करते हैं।
3. ये बैंक केवल ऋण नहीं देते बल्कि उद्योगों के विकास में सहायक होते हैं।	3. ये बैंक प्रायः ऋण देने तक सीमित होते हैं।

अथवा

प्रश्न—भारत की शिक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करने के चार उपाय लिखिये।

उत्तर—भारत की शिक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करने के उपाय निम्नलिखित हैं—

1. साक्षरता को बढ़ावा—छठी पंचवर्षीय योजना में प्रारम्भिक शिक्षा के माध्यम से साक्षरता में वृद्धि लाने की योजना थी। सातवीं पंचवर्षीय योजना में 15 से 35 आयु वर्ग वाले लोगों में निरक्षरता समाप्त करने का कार्यक्रम था। आठवीं पंचवर्षीय योजना के अन्त तक 15 से 35 आयु वर्ग के 10 करोड़ लोगों को साक्षर बनाने का लक्ष्य रखा था। इस मिशन का उद्देश्य देश से निरक्षरता को समाप्त करना है।

2. शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन—1986 की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन पर बल दिया गया। इसमें शिक्षा के विभिन्न स्तर पर इसकी गुणवत्ता में सुधार लाना, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी शिक्षा का विस्तार करना। शिक्षा क्षेत्र में अवसर बढ़ाना आदि कार्यक्रम प्रमुख हैं।

3. प्राथमिक शिक्षा में सुधार—शाला त्यागी बच्चों की समस्या को सुलझाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्राथमिक स्कूलों में सुधार लाने की बात कही गई जिसे 'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड' कहा जाता है। नि:शुल्क भोजन की व्यवस्था हुई जिसका उद्देश्य सबको शिक्षा मिले, छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन मिले, स्कूलों में दाखिले की संख्या बढ़ाना आदि।

4. तकनीकी शिक्षा पर बल—उच्चतर तथा तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाना तथा उनकी गुणवत्ता में सुधार लाने पर विशेष बल दिया गया।

●

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर, मई-जून-2012

कक्षा–12वीं

विषय : अर्थशास्त्र

सेट-2

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 100**

निर्देश—सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

(i) प्रश्न क्रमांक **1** से **5** तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं। प्रश्न क्रमांक 6 से **10** तक रिक्त स्थान, प्रश्न क्रमांक 11 से 16 तक सही/गलत एवं प्रश्न क्रमांक **17** से **22** तक एक शब्द/एक वाक्य वाले प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर **1** अंक निर्धारित है।

(ii) प्रश्न क्रमांक **23** से **31** तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। शब्द सीमा **75** शब्द। प्रत्येक पर **4** अंक निर्धारित हैं।

(iii) प्रश्न क्रमांक **32** से **38** तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। शब्द सीमा **250** शब्द। प्रत्येक प्रश्न पर **6** अंक निर्धारित हैं।

सही विकल्प का चयन कीजिये :

1. ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना प्रारम्भ हुई—

(a) 31 मार्च 2007 (b) 1 अप्रैल, 2007

(c) 1 अप्रैल 2008 (d) 1 अप्रैल, 2011

उत्तर—(b) 1 अप्रैल, 2007

2. राष्ट्रीय नियोजन समिति का गठन इनके नेतृत्व में किया गया—

(a) महात्मा गांधी (b) पं. जवाहरलाल नेहरू

(c) श्रीमती इन्दिरा गांधी (d) लाल बहादुर शास्त्री

उत्तर—(b) पं. जवाहरलाल नेहरू।

3. हरित क्रान्ति कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ—

(a) 1978 (b) 1967

(c) 1970 (d) 1985

उत्तर—(b) 1967.

4. भारत की लगभग जनसंख्या कृषि से जीविका प्राप्त करती है—

(a) 20% (b) 30%

(c) 70% (d) 48%

उत्तर—(c) 70%

5. परमाणु ऊर्जा का स्रोत है—

(a) कोयला (b) जल

(c) मीथेन (d) यूरेनियम

उत्तर—(d) यूरेनियम।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

6. नियोजन उपलब्ध संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग ..... है।
उत्तर—एक तरीका।

7. सूचकांक एक.....औसत है।
उत्तर—विशिष्ट आय।

8. घरेलू नौकर रखना.....क्षेत्र में आता है।
उत्तर—तृतीयक।

9. रियायती दरों पर दिये जाने वाले ऋण..... कहलाता है।
उत्तर—विदेशी सहायता।

10. नदियाँ, जलाशय, तालाब, झील आदि..... जल स्रोत हैं।
उत्तर—सतही।

सही/गलत कथन का चयन कीजिए

11. बजटीय नीति से अभिप्राय सरकार की आय और व्यय नीति से है।
उत्तर—सही।

12. आंकड़ों को अर्थपूर्ण बनाने के लिए उन्हें व्यवस्थित करना आवश्यक नहीं है।
उत्तर—गलत।

13. राष्ट्रीय आय देश में आयोजन की सफलता की संकेतक है।
उत्तर—सही।

14. अपने देश की वस्तुओं का विक्रय आयात कहलाता है।
उत्तर—गलत।

15. वर्ष 1990 की व्यापार नीति का उद्देश्य व्यापार में उदारीकरण लाना था।
उत्तर—सही।

16. "छले अधिकांश वर्षों में भारत के चालू खाते में घाटे की स्थिति रही है।
उत्तर—सही।

एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए

प्रश्न 17. किस राज्य में सबसे सर्वाधिक साक्षरता प्रतिशत है ?
उत्तर—केरल।

प्रश्न 18. विदेशी व्यापार में दिशा का अर्थ बताइये।
उत्तर—दिशा का अर्थ है कि देश किन-किन अन्य देशों से आयात-निर्यात करता है।

प्रश्न 19. व्यापारिक कृषि के दो नाम लिखिए।
उत्तर—व्यापारिक कृषि—कपास एवं जूट।

प्रश्न 20. ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड किससे सम्बन्धित है ?
उत्तर—शाला त्यागे बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित है।

प्रश्न 21. कौन विदेशी मुद्रा अर्जित करने का महत्वपूर्ण स्रोत है ?

उत्तर—निर्यात।

प्रश्न 22. आर्थिक बुनियादी सुविधाओं का अर्थ बताइये।

उत्तर—आर्थिक बुनियादी सेवा से आशय बिजली, जल, परिवहन, संचार एवं बैंक सुविधाओं से है।

प्रत्येक प्रश्न पर विकल्प के प्रावधान हैं। प्रश्नों के उत्तर 75 शब्दों में दीजिए—

प्रश्न 23. पूर्ति की परिभाषा दीजिए। वस्तु की पूर्ति किसके द्वारा की जाती है ?

उत्तर—पूर्ति की परिभाषा—प्रो. बेन्हम के अनुसार—''पूर्ति का आशय वस्तु की उस मात्रा से है जिसे प्रति इकाई समय में बेचने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।''

वस्तु की पूर्ति निर्माताओं एवं उत्पादकों के द्वारा की जाती है।

अथवा

प्रश्न—पूर्ति के नियम के चार अपवाद कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—पूर्ति के नियम के अपवाद—निम्नलिखित दशाओं में पूर्ति का नियम लागू नहीं होता है—

1. भविष्य में कीमतों में अधिक कमी या वृद्धि की सम्भावना होने पर पूर्ति का नियम क्रियाशील नहीं होगा।

2. **कृषि वस्तुओं पर यह नियम लागू नहीं होता है**—कृषि वस्तुओं की पूर्ति, प्रकृति पर निर्भर करती है। अत: कृषि वस्तुओं को इनकी कीमतें बढ़ने पर नहीं बढ़ाया जा सकता है; जैसे—फसलों पर कीड़ों का प्रकोप हो जाने के कारण कृषि उपज घट जाती है और इनकी कीमतें बढ़ने लगती हैं। ऐसी दशा में कृषि वस्तुओं की कीमतें बढ़ने पर भी इसकी पूर्ति नहीं बढ़ जाती है।

3. कलात्मक वस्तुओं के सम्बन्ध में यह नियम लागू नहीं होता—कलात्मक वस्तुओं पर भी यह नियम लागू नहीं होता है, क्योंकि उनकी कीमत बढ़ने पर पूर्ति नहीं बढ़ाई जा सकती।

4. नीलाम की गई वस्तुओं पर भी यह नियम लागू नहीं होता है—चूंकि नीलाम की जाने वाली वस्तु सीमित मात्रा में होती है। अत: इसकी कीमतें बढ़ने पर भी इसकी पूर्ति नहीं बढ़ाई जा सकती।

प्रश्न 24. अप्रत्यक्ष कर से क्या आशय है ? इसकी दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—अप्रत्यक्ष कर वह कर होता है, जो एक व्यक्ति पर लगाया जाता है किन्तु वह आंशिक या पूर्णरूप से दूसरे व्यक्ति द्वारा वहन किया जाता है; जैसे सीमा शुल्क, संघ उत्पादन शुल्क, सेवा कर, बिक्री कर आदि।

विशेषताएँ— (i) यह सेवाओं के उत्पादन पर लगाया जाता है।

(ii) यह कर वस्तुओं के विक्रय पर लगाया जाता है।

अथवा

प्रश्न—पत्र मुद्रा का अर्थ तथा इसके प्रकार लिखिए।

उत्तर—पत्र-मुद्रा का अर्थ—कागजी नोटों के रूप में निर्गमित मुद्रा को पत्र-मुद्रा कहते हैं। पत्र-मुद्रा पर किसी सरकारी अधिकारी या केन्द्रीय बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर होते हैं।

पत्र-मुद्रा को दो भागों में बांटा जा सकता है—

1. प्रतिनिधि पत्र-मुद्रा—जब निर्गमित पत्र-मुद्रा के पीछे ठीक इसके मूल्य के बराबर सोना व चांदी, आरक्षित निधि के रूप में रखे जाते हैं तब इस पत्र मुद्रा को प्रतिनिधि पत्र मुद्रा कहते हैं।

2. प्रादिष्ट पत्र-मुद्रा—यह भी पत्र-मुद्रा का ही एक रूप है। प्रादिष्ट मुद्रा प्राय: संकटकालीन स्थिति में निर्गमित की जाती है। इसलिए इसे कभी-कभी संकटकालीन पत्र मुद्रा भी कहा जाता है।

प्रश्न 25. बजटीय नीति की अवधारणा की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—बजटीय नीति की अवधारणा—बजट सरकार के 1 वर्ष के व्ययों और प्राप्तियों का ब्यौरा देता है। अत: वित्त मंत्री की सोच-विचार भी दो प्रश्नों पर केन्द्रित रहती है, सरकार किन-किन पर व्यय करें ? व्यय के लिए वित्तीय साधन कहाँ से जुटाये ? व्यय की मदों और वित्तीय साधनों का चुनाव सरकार की नीति और कार्यक्रमों से प्रभावित होता है। इसे ही बजटीय नीति या राजकोषीय नीति कहते हैं।

अथवा

प्रश्न—बजटीय नीति के उद्देश्य लिखिए। (कोई चार)

उत्तर— उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक 26 देखें।

प्रश्न 26. भारत में आर्थिक नियोजन की उपलब्धियाँ लिखिए। (कोई चार)

उत्तर—भारत में आर्थिक नियोजन की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं—

1. राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि—तीसरी योजना को छोड़कर प्रत्येक योजना में राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर वृद्धि दर्ज की गई है। पर जिस गति से राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है प्रति व्यक्ति आय में नहीं हुई है।

2. कृषि उत्पादन में वृद्धि—आर्थिक नियोजन लागू होने से कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारत विश्व के कई देशों को खाद्यान्नों का निर्यात करता है।

3. औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि—योजनाकाल के 47 वर्षों में औद्योगिक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। आधारभूत उद्योगों की स्थापना हुई है। उद्योगों में विविधता आई है तथा उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है।

4. **अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण**—नियोजन के द्वारा अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण तेजी से हुआ है। बैंक, संचार सुविधाएँ, नई प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण बदला है।

अथवा

प्रश्न—1991 की औद्योगिक नीति में किये गये मुख्य परिवर्तन लिखिए।

उत्तर—1991 में औद्योगिक नीति में किये गये परिवर्तन—

1. लाइसेंस प्रणाली से मुक्ति—ऐसे उद्योग जिनसे पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ सकता था को छोड़कर शेष उद्योगों के लिए लाइसेंस का प्रतिबंध हटा दिया।

2. बड़े उद्योगों पर से प्रतिबंध हटाया गया—बड़े औद्योगिक घरानों का अपना क्षेत्राधिकार सभी दिशाओं में फैलाने की अनुमति दी गई है।

3. विदेशी निवेश की स्वतंत्रता—विदेशी निवेशकों को भारतीय उद्योगों में कुल पूंजी का 51% तक पूँजी लगाने की स्वतंत्रता दी गई।

4. सरकार के लिए सुरक्षित उद्योग निजी क्षेत्र के लिए खोल दिये गए—राष्ट्रीय महत्व के उद्योगों को छोड़कर शेष उद्योग जो सरकार के लिए सुरक्षित थे निजी क्षेत्रों के लिए खोल दिए गए।

5. प्रौद्योगिकी के आयात की स्वतंत्रता—भारतीय उद्योगों को विदेशों से प्रौद्योगिकी के आयात करने की आजादी दे दी गई।

प्रश्न 27. सूचकांक के चार महत्व समझाइये।

उत्तर—सूचकांक का महत्व—

1. कर निर्धारण में सहायक—सूचकांक एवं निर्देशांक सरकार को कर नीति के निर्धारण में सहायता प्रदान करते हैं।

2. जीवन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन—सूचकांक की सहायता से लोगों के जीवन स्तर में होने वाले परिवर्तनों का विभिन्न देशों के विभिन्न क्षेत्रों के बीच तुलना करने के लिए प्रयोग किये जाते हैं।

3. व्यवसायियों के लिए उपयोगी—यह व्यापारी एवं उत्पादकों के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होती है क्योंकि इनकी सहायता से उन्हें मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन तथा सामान्य आर्थिक स्थिति का पता चलता है जिसके अनुसार ये वर्ग अपने उत्पादन एवं व्यापार की योजना तैयार करते हैं।

4. मूल्य सूचकांक अर्थव्यवस्था में स्फीति कारक तथा अवस्फीति कारक प्रवृत्तियों का भी अच्छा मापक है।

अथवा

प्रश्न—सूचकांक का आशय क्या है ? इसकी दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—सूचकांक का आशय—सूचकांक एक सांख्यिकीय रचना है जिसका उद्देश्य दो समयों (जैसे—1990 और 1992 या दो स्थानों जैसे रायपुर और बिलासपुर) के बीच एक या अधिक सम्बन्धित चरों के औसत परिवर्तन को दिखाता है। निर्देशांक के द्वारा एक पर्यटक को विभिन्न पर्यटन स्थलों पर निर्वाह व्यय के बारे में जानकारी मिल सकती है।

सूचकांक की विशेषताएँ—

1. तुलना का आधार—सूचकांक समय या स्थान के कारण होने वाले परिवर्तन के प्रभाव को मापते हैं।

उदाहरणार्थ—1990 से 1992 तक कृषि कीमतों में विशुद्ध परिवर्तन को ज्ञात कर सकते हैं।

2. सूचकांक विशिष्ट प्रकार का औसत है—निर्देशांक परिवर्तन की दशा को औसत रूप में प्रकट करते हैं। इसमें सामान्य रूप से परिवर्तन की दिशा व मात्रा का मापन होता है।

3. सार्वभौमिक उपयोगिता—निर्देशांकों की सार्वभौमिक उपयोगिता है। आर्थिक एवं व्यावसायिक युग में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो, जहाँ पर सूचकांकों का प्रयोग न होता हो।

प्रश्न 28. मूल्य वृद्धि द्वारा राष्ट्रीय आय मापने के मुख्य चरण बताइये।

उत्तर—उत्पादन विधि या मूल्य वृद्धि विधि से राष्ट्रीय आय मापने के निम्नलिखित चरण हैं—

1. देश के आर्थिक क्षेत्र में स्थित उत्पादन इकाईयों को औद्योगिक वर्गों में बांटना; जैसे—कृषि, खनन, विनिर्माण, बैंकिंग, व्यापार आदि।

2. औद्योगिक क्षेत्रों की साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि का अनुमान लगाना—

(i) उत्पादन के मूल्य का अनुमान लगाना।

(ii) मध्यवर्ती उपभोग के मूल्य का अनुमान लगाना और इसे उत्पादन मूल्य में से घटाकर बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि ज्ञात करना।

(iii) बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि में से स्थिर पूँजी का उपभोग व अप्रत्यक्ष कर घटाकर और आर्थिक सहायता जोड़कर साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि ज्ञात करना।

3. समस्त औद्योगिक क्षेत्रों की साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि को जोड़कर साधन लागत

पर शुद्ध घरेलू उत्पाद ज्ञात करना।

4. साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय जोड़कर राष्ट्रीय आय ज्ञात करना।

अथवा

प्रश्न—व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय मापने के मुख्य चरण बताइये।

उत्तर—राष्ट्रीय आय को व्यय विधि द्वारा मापने के प्रमुख चरण निम्नलिखित हैं—

1. अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के अन्तिम उत्पादों पर होने वाले निम्नलिखित व्ययों का अनुमान लगाये—(i) निजी अन्तिम उपभोग व्यय (ii) सरकारी अन्तिम उपभोग व्यय (iii) सकल घरेलू पूँजी निर्माण (iv) शुद्ध निर्यात। उपरोक्त सभी क्षेत्रों के अन्तिम उत्पादों पर होने वाले व्ययों को जोड़ने से हमें बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद ज्ञात होता है।

2. बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद में से स्थिर पूंजी का उपयोग और अप्रत्यक्ष कर घटाकर तथा आर्थिक सहायता जोड़कर साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद ज्ञात होता है।

3. साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय जोड़ने पर साध न लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात होता है।

प्रश्न 29. भारत में विदेशी व्यापार की दिशा की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए। (किन्हीं चार बिन्दुओं पर)

उत्तर—भारत में विदेशी व्यापार की दिशा—

1. आर्थिक सहयोग एवं विकास के लिए संगठन वाले देश—इसमें तीन प्रकार के देशों को शामिल किया गया है—(i) यूरो"यन आर्थिक समुदाय के देश, बेल्जियम, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैण्ड, इंग्लैण्ड (ii) उत्तरी अमेरिका देश कनाडा, अमेरिका (iii) एशिया एवं भूमध्य सागर देश—ऑस्ट्रेलिया एवं जापान।

2. तेल निर्यातक देश—ईरान, इराक, कुवैत और सऊदी अरब।

3. पूर्वी यूरोप के देश—रोमानिया, जर्मनी, रूस।

4. विकासशील देश—अमेरिका एवं एशिया महाद्वीप के देश ''तेल निर्यातक देशों को छोड़कर''।

अथवा

प्रश्न—विदेशी पूँजी का क्या अर्थ है ? विदेशी पूँजी की आवश्यकता को समझाइये।

उत्तर—विदेशी पूँजी का अर्थ—विदेशी पूंजी का अर्थ ऐसे पूँजी से है जो अनिवासीय निवेशकों द्वारा देश में लगायी जाती है। इसके स्वामी अनिवासी निवेशक स्वयं होते हैं। अनिवासीय शेयर, ऋण, अनुदान या फिर प्रत्यक्ष निवेश के रूप में पूँजी लगाते हैं। इन सभी रूपों में विदेशी पूँजी देश में आती है।

विदेशी पूँजी की आवश्यकता—

1. बचत अन्तराल—अल्पविकसित देशों में आय का स्तर काफी नीचा होता है जिससे बचत और उसके परिणामस्वरूप कम निवेश होता है। घरेलू बचत की इसी कमी को विदेशी पूँजी पूरा करती है।

2. विदेशी विनिमय अन्तराल—अल्पविकसित देशों में पूँजीगत साज-सज्जा विकसित देशों से मंगानी पड़ती है। इसके लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता पड़ती है जिसे निर्यात के माध्यम से

जुटाया जा सकता है किन्तु निर्यात काफी कम होने के कारण विनिमय अन्तराल पैदा हो जाता है। विदेशी पूँजी इस अन्तर को कम कर विकास की प्रक्रिया को गति प्रदान करती है।

3. प्रौद्योगिकी अन्तराल—आर्थिक विकास के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी विकास को स्था"त करने के लिए विदेशी विशेषज्ञों की सेवाओं की आवश्यकता होती है। विदेशी पूँजी इस कार्य में सहयोग प्रदान करती है।

प्रश्न 30. विकासशील देशों में ऊँची जनसंख्या वृद्धि का प्राकृतिक और मानवीय साधनों पर क्या प्रभाव पड़ता है ? (कोई दो कारण)

उत्तर—(1) मानवीय संसाधनों पर प्रभाव—मानवीय संसाधन श्रम शक्ति का महत्वपूण र्ा स्रोत है, यदि प्राकृतिक संसाधनों का समुचित विदोहन किया जाता है तो संसाधन का महत्वपूर्ण उपयोग होता है। इस कारण बेरोजगारी नहीं पायी जाती है परन्तु जब इनका उचित रूप से उपयोग नहीं होता है तो बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। विकासशील देशों में रोजगार की कमी रहती है। इस कारण जनसंख्या वृद्धि का विपरीत प्रभाव पड़ता है।

(2) प्राकृतिक संसाधनों पर प्रभाव—निम्नलिखित प्रभाव पड़ता है—

1. कृषि भूमि पर प्रभाव—जनसंख्या वृद्धि से कृषि भूमि पर दबाव बढ़ता है और कृषि विभ. ाजन से कृषि जोत का आकार छोटा हो जाता है। अत: हम तकनीकी व्यवस्था लागू नहीं कर सकते।

2. वनों पर प्रभाव—देश की सम्पदा में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। वनों से पर्यावरण का सन्तुलन बना रहता है। जब जनसंख्या में वृद्धि होती है तो मकान, कृषि कार्यों आदि के कारण वनों की कटाई, दोहन करते हैं जिससे वन प्रभावित होता है।

3. खनिज सम्पदा पर प्रभाव—विकासशील देशों में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर से संसाध ानों का अत्यधिक उपयोग होता है। जिसके कारण खनिज संसाधन तेजी से समाप्त हो रहे हैं जिसका प्रभाव हमारे आने वाले कल पर पड़ना स्वाभाविक है।

अथवा

प्रश्न—ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या से क्या आशय है ?

उत्तर—देश की कुल जनसंख्या में ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या के अनुपात को ही ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या कहते हैं। भारत की लगभग तीन-चौथाई जनसंख्या गाँवों में निवास करती है इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था को ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी कहते हैं। सन् 1901 में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 89·2 था जो कि सन् 1991 में घटकर 74·3% हो गया।

प्रश्न 31. भारतीय अर्थव्यवस्था की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक 23 (अथवा) देखें।

अथवा

प्रश्न—विकसित देश की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—विकसित देश की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

1. विकसित देशों में जन्म-दर एवं मृत्यु-दर कम होती है। इनमें जनसंख्या वृद्धि दर भी कम होती है।

2. जीवन की गुणवत्ता अच्छी होती है। साक्षरता दर ऊँची होती है। बेहतर चिकित्सा सुविध ाएँ उपलब्ध हैं। जीवन की सम्भावना भी ऊँची है।

3. इन देशों में उद्योग व प्रौद्योगिकी विकसित है।

4. इन देशों में आय व उपभोग का स्तर ऊँचा होता है। अत: रहन-सहन का ऊँचा स्तर होता है।

नोट—निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। सभी प्रश्नों पर विकल्प के प्रावधान हैं।

प्रश्न 32. व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर लिखिए। (कोई छ:)

उत्तर—उत्तर हेतु सेट -1 का प्रश्न क्रमांक-24 (अथवा) देखें।

अथवा

प्रश्न—माँग का अर्थ बताइये। मांग तालिका का प्रकार बताते हुए व्यक्तिगत मांग तालिका बनाइये।

उत्तर—मांग तालिका का अर्थ—एक निश्चित समय में विभिन्न कीमतों पर वस्तु की खरीदी जाने वाली मात्रा को बताने वाली सूची मांग तालिका कहलाती है।

मांग तालिका के प्रकार—

1. व्यक्तिगत मांग तालिका—व्यक्तिगत मांग तालिका में एक व्यक्ति के द्वारा एक निश्चित समयावधि में वस्तु की विभिन्न कीमतों पर वस्तु की खरीदी जाने वाली मात्राओं को दिखाया जाता है।

इस तालिका के बायीं ओर वस्तु का मूल्य तथा दायीं ओर वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा को दिखाया जाता है।

व्यक्तिगत मांग तालिका

संतरे का मूल्य (प्रति इकाई रु. में)	संतरे की मांग (इकाइयों में)
1	1,000
2	700
3	400
4	200
5	100

2. बाजार मांग तालिका—बाजार मांग तालिका एक निश्चित समयावधि में वस्तु की विभिन्न कीमतों पर उनके सभी खरीददारों द्वारा वस्तु की मांगी गई मात्राओं के कुल योग को दर्शाती है।

प्रश्न 33. कुल आगम व कुल लागत की सहायता से समझाइये कि उत्पादक अधिकतम लाभ की स्थिति कैसे चुनता है ?

उत्तर—एक बार जब कोई उत्पादक किसी वस्तु को उत्पादन व विक्रय करने के लिए चुन लेता है तो वह इससे अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहता है। हमें यह ज्ञात करना है कि वह इस वस्तु की कितनी मात्रा उत्पादित व विक्रय करे जिससे कि उसे अधिकतम लाभ मिले। इसके लिए हमें उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर, कुल लागत और कुल आगम की जानकारी चाहिए।

एक स्थिति में उत्पादक दी हुई कीमत पर वस्तु की जितनी मात्रा बेच सकता है। दूसरी स्थिति में उत्पादक केवल कीमत कम करके ही वस्तु की अधिक मात्रा बेच सकता है। स्थिति चाहे कोई भी हो, इससे अधिकतम लाभ की स्थिति का पता लगाने की विधि में कोई अन्तर नहीं पड़ता है।

अथवा

प्रश्न—सीमान्त आगम व सीमान्त लागत के आंकड़ों की सहायता से समझाइये कि उत्पादक अधिकतम लाभ की स्थिति कैसे चुनता है ?

उत्तर—सीमान्त आगम और सीमान्त लागत के आँकड़ों से भी अधिकतम लाभ की स्थिति का पता लगाया जा सकता है। एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन व बिक्री से कुल आगम में जो शुद्ध वृद्धि होती है, उसे सीमान्त आगम कहते हैं और एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन करने से कुल लागत में जो शुद्ध वृद्धि होती है, उसे सीमान्त लागत कहते हैं।

अधिकतम लाभ की स्थिति को स्पष्ट करने से पहले यह निर्णय करना पड़ता है कि एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करें या नहीं। इसके लिए उत्पादक यह पता लगाएगा कि इकाई के उत्पादन से उसे लाभ होगा, या नहीं। इस प्रक्रिया में हमें यह देखना है कि सीमान्त आगम > सीमान्त लागत से जब सीमान्त आगम < सीमान्त लागत, तब सीमान्त आगम = सीमान्त लागत के इन तीनों स्थितियों में से अधिकतम लाभ की स्थिति जब सीमान्त लाभ लागत = सीमान्त आगम।

उपरोक्त तीनों स्थितियों में से अधिकतम लाभ की स्थिति उस समय होती है जबकि सीमान्त आगम (MR) और सीमान्त लागत (MC) बराबर हो।

प्रश्न 34. विकसित एवं विकासशील देशों में छः अन्तर लिखिए।

उत्तर— विकसित एवं विकासशील देशों में अन्तर

विकसित देश	विकासशील देश
1. यहाँ जन्म दर एवं मृत्यु दर कम होती है।	यहाँ जन्म दर एवं मृत्यु दर अधिक होती है।
2. इन देशों में उद्योग और प्रौद्योगिकी विकसित होती है।	यह उद्योग एवं प्रौद्योगिकी में पिछड़े होते हैं।
3. इन देशों में साक्षरता दर ऊँची होती है।	इन देशों में साक्षरता दर निम्न होती है।
4. यहाँ पर्याप्त मात्रा में पूँजी उपलब्ध होती है।	इन देशों में पूँजी की मात्रा कम होती है।
5. यहाँ रोजगार के अवसर अधिक उपलब्ध होते हैं।अतःयहाँरहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है।	रोजगार स्तरों में कमी के कारण यहाँ रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है।
6. इन देशों में आय एवं उपभोग का स्तर ऊँचा होता है।	इन देशों में आय एवं उपभोग का स्तर निम्न होता है।

अथवा

प्रश्न—आर्थिक एवं अनार्थिक क्रियाओं में छः अन्तर लिखिए।

उत्तर—आर्थिक एवं अनार्थिक क्रियाओं में अन्तर

आर्थिक क्रियाएँ	अनार्थिक क्रियाएँ
1. धन प्राप्ति के उद्देश्य से किया गया कार्य आर्थिक क्रिया कहलाता है।	ऐसा कार्य जिनका उद्देश्य धनोपार्जन नहीं होता है, अनार्थिक क्रियाएँ कहलाता है।
2. इन क्रियाओं का वैधानिक होना आवश्यक है।	अनार्थिक क्रियाओं का वैधानिक होना आवश्यक नहीं है।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक 36 देखें।

अथवा

प्रश्न—एक अल्प विकसित देश की आर्थिक संवृद्धि एवं जनसंख्या वृद्धि दर के सम्बन्ध में बताइये।

उत्तर—किसी देश की आर्थिक संवृद्धि के वहाँ उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों एवं जनसंख्या अनुपात पर निर्भर करती है। यदि किसी देश

3. इसका क्षेत्र सीमित होता है।	इन क्रियाओं का क्षेत्र असीमित होता है।
4. इससे धन और सम्पत्तियों का निर्माण होता है।	इससे केवल मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि होती है।
5. यह आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है।	यह सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है।

प्रश्न 35. प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों के कार्यों की प्रकृति समझाइये।

उत्तर—**(1) प्राथमिक क्षेत्र**—इसमें प्राकृतिक साधनों का प्रयोग करने वाली उत्पादन इकाइयाँ शामिल की जाती हैं; उदाहरण—कृषि वानिकी एवं लट्ठा बनाना, मत्स्य, खनन एवं उत्खनन।

(2) द्वितीयक क्षेत्र—वे इकाइयाँ जो किसी वस्तु का रूप परिवर्तित कर नया रूप देती हैं, द्वितीयक क्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं।

उदाहरण—विद्युत, गैस एवं जल आपूर्ति, पंजीकृत विनिर्माण आदि।

(3) तृतीयक क्षेत्र—तृतीयक क्षेत्र में उन सभी इकाईयों को रखा जाता है जो सेवाएँ प्रदान करती हैं; जैसे—बैंकिंग, बीमा, व्यापार, होटल एवं जलपान गृह, परिवहन आदि।

अथवा

प्रश्न—राष्ट्रीय आय का अर्थ बताते हुए राष्ट्रीय आय के दो दृष्टिकोण समझाइये।

उत्तर—**राष्ट्रीय आय का अर्थ**—राष्ट्रीय आय देश के निवासियों को प्राप्त उन साधन आयों का योग है जो उन्हें देश के आर्थिक क्षेत्र के अन्दर और बाहर उत्पादन कार्यों के लिए एक वर्ष में प्राप्त होती है। ये साधन आय कर्मचारियों को पारिश्रमिक, किराया, ब्याज व लाभ के रूप में होती है।

राष्ट्रीय आय मापन के तीन दृष्टिकोण हैं—

1. उत्पादन विधि (मूल्य वृद्धि विधि)—इस विधि में मूल्य वृद्धि दृष्टिकोण से राष्ट्रीय आय मापी जाती है। अत: उत्पादन विधि से राष्ट्रीय आय ज्ञात करने के लिए एक वर्ष में समस्त वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्यों के योग का बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद ज्ञात किया जाता है।

2. आय वितरण विधि—इस विधि में राष्ट्रीय आय उस समय मापी जाती है जब उत्पादन इकाईयाँ आय को साधन के स्वामियों में बांटती हैं; जैसे—कृषि, वानिकी, कर्मचारियों का पारिश्रमिक, किराया, ब्याज, लाभ आदि। इन सभी साधन आयों का योग 'घरेलू आय' कहलाता है। यह राष्ट्रीय आय का दूसरा दृष्टिकोण है।

3. अन्तिम व्यय विधि—इस विधि में सर्वप्रथम बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद मानते हैं जो कि उपभोग और निवेश हेतु अन्तिम उत्पादों पर होने वाला व्यय है। इसमें से हम स्थिर पूँजी का उपभोग और शुद्ध अप्रत्यक्ष कर घटाकर तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय को छोड़कर राष्ट्रीय आय प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 36. आयु एवं लिंग के आधार पर भारत की जनसंख्या की विवेचना कीजिए।

के पास पर्याप्त प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं तथा वहाँ की जनसंख्या उसके अनुपात में पर्याप्त है तो वहाँ श्रम शक्ति की उपलब्धता इन प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन के द्वारा अधिकाधिक उत्पादन करने में सक्षम होगा।

यदि उपलब्ध संसाधनों की अपेक्षा जनसंख्या कम होती है अर्थात् श्रम शक्ति कम होती है तो वहाँ के संसाधनों का पर्याप्त विदोहन नहीं किया जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि दर का अनुपात देश में उपलब्ध संसाधनों से अधिक है तो ऐसी दशा में प्राकृतिक संसाधन लोगों की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर सकेगी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि देश के आर्थिक विकास में बाधा आती है। अर्थात् देश में उप. लब्ध संसाधनों एवं जनशक्ति का अनुपात समान होना चाहिए। इस प्रकार आर्थिक संवृद्धि दर एवं जनसंख्या वृद्धि दर में परस्पर सम्बन्ध होता है।

प्रश्न 37. किसी देश के औद्योगिक विकास को प्रभावित करने वाले छः कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—औद्योगिक विकास पर प्रभाव डालने वाले कारक निम्नलिखित हैं—

(1) कच्चे माल की उपलब्धता—उद्योगों के विकास हेतु निरन्तर कच्चे माल की आवश्यकता होती है। यदि कच्चे माल की आपूर्ति लगातार नहीं होती तो उत्पादन रुक जायेगा। कच्चे माल के अभाव में विकास रुक जाता है।

(2) प्रौद्योगिकी की उपलब्धता—जिस देश में प्रौद्योगिकी का स्तर जितना ऊँचा होगा विकास उतना ऊँचा होगा और उत्पादन बढ़ेगा। नयी तकनीक का प्रयोग करके अधिक उत्पादन किया जा सकता है।

(3) बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता—सड़क, रेल, हवाई अड्डा, पुल, बाँध, जल, विद्युत, आदि बुनियादी सेवाओं की श्रेणी में आते हैं। ये सुविधाएँ उद्योगों के विकास में आवश्यक होती हैं।

(4) श्रम शक्ति—उद्योगों के विकास श्रम के बिना सम्भव नहीं है। श्रम के बिना कार्य सम्भव नहीं है, क्योंकि उत्पादन के साधनों में श्रम ही सक्रिय साधन है। श्रम शक्ति से अभिप्राय दक्ष व अदक्ष दोनों होता है। श्रम शक्ति की उपलब्धता से औद्योगिक विकास तेजी से होता है।

(5) वस्तुओं की माँग—बाजार में माँग के अनुरूप वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। माँग देश के भीतर या बाहर भी हो सकती है। माँग के आधार पर ही वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।

अथवा

प्रश्न—लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा किये गये छः उपाय बताइये।

उत्तर—लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा किये गए उपाय—

1. सरकारी खरीद में प्राथमिकता—सरकार द्वारा इन उद्योगों की वस्तुओं को अपने विभ. ागों में क्रय करने की प्राथमिकता दी जाती है। कुछ वस्तुओं का क्रय पूर्ण रूप से लघु उद्योगों से किया जाता है।

2. प्रदर्शनियों का आयोजन—जनता को इन उद्योगों की वस्तुओं की जानकारी देने के लिए सरकार द्वारा स्थान-स्थान पर प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है।

3. औद्योगिक सहकारिताओं की स्थापना—सरकार लघु क्षेत्र में सरकारी संगठन को बढ़ावा दिया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप सहकारी समितियों की संख्या में बराबर वृद्धि हो रही है।

ms 1-46

4. लाइसेंस से छूट—कुछ वस्तुओं के उत्पादन केवल इस क्षेत्र के लिए सुरक्षित कर दिये गये हैं। इसमें पहले 180 वस्तुएँ शामिल थीं जिनकी संख्या बढ़ा दी गई है।

5. प्राथमिकता के आधार पर ऋण—वाणिज्यिक बैंकों से ऋण लेने के उद्देश्य से लघु उद्योग क्षेत्र को प्राथमिक क्षेत्र घोषित कर दिया।

6. आधुनिकीकरण में सहायता—लघु उद्योग प्रायः पुरानी तकनीक व पुरानी मशीनों का प्रयोग करते हैं जिससे लागत बढ़ जाती है अतः लघु उद्योगों को आधुनिक मशीन खरीदने में सरकार ने अनेक योजनाएँ शुरू की हैं।

प्रश्न 38. देश के आर्थिक विकास में परिवहन के छः साधनों का महत्व लिखिए।

उत्तर—देश के आर्थिक विकास में परिवहन साधनों का महत्व निम्नलिखित है—

1. उच्च जीवन स्तर—यातायात के कारण मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम हो चुका है। जीवन-यापन के साधनों में वृद्धि होने से उसका जीवन-स्तर पहले से ऊँचा उठा है। नौकरी, व्यापार व अन्य जीविकोपार्जन कार्यों के लिए मनुष्य आसानी से कहीं भी आ-जा सकता है। इस प्रकार वे अपनी आय में वृद्धि कर सकता है।

2. श्रम की गतिशीलता—यातायात के तीव्रगामी साधनों के कारण ही श्रम की गतिशीलता में पर्याप्त वृद्धि हुई है। परिवहन के कारण दूरी कम होने से मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान तक, यहाँ तक कि दूसरे देश भी जा रहे हैं।

3. संसाधनों का उपयोग—यातायात के साधनों से देश के संसाधनों का अधिकतम उचित उपयोग हो सकता है। संसाधनों के अधिकतम उचित उपयोग से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को काफी लाभ मिला है।

4. रोजगार में वृद्धि—यातायात के साधनों के विकास से हजारों लोगों को रोजगार की प्राप्ति हुई है। परिवहन के कारण ड्राईवर, साधनों को सुधारने वाले, शिक्षक, डॉक्टर, आदि लोग रोजगार हेतु जाने को तैयार रहते हैं।

5. अनेक वस्तुओं का उपभोग—यातायात साधनों के कारण उन वस्तुओं का उपयोग करने में सक्षम हुए हैं जो हमारे राज्य या देश में नहीं बनते हैं। इन वस्तुओं का उपयोग करने से हमारे जीवन-स्तर में वृद्धि हुई है।

6. देश की रक्षा में सहायक—देश को विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रखने के लिए सीमा क्षेत्रों पर सैनिक बलों की उपस्थिति होना अनिवार्य है। युद्ध के समय सैनिक हथियार, खाद्य-सामग्री आदि लाने व ले जाने के लिए यातायात एक मात्र साधन है।

अथवा

प्रश्न—टिप्पणी लिखिए—

रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन

उत्तर—रेडियो—सातवीं पंचवर्षीय योजना तक आकाशवाणी की पहुँच सारे भारत में थी। इसके सिग्नल सभी जगह पहुँचते हैं। आकाशवाणी अब 93% जनसंख्या तक पहुँचती है। इस समय देश में 134 प्रसारण केन्द्र हैं।

टेलीविजन—आज तक दूरदर्शन देश के 53% जनसंख्या तक पहुँच पाया है। सातवीं पंचवर्षीय योजना तक 31 दूरदर्शन केन्द्र थे। अब प्रादेशिक भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।

टेलीफोन—देश में दिन-प्रतिदिन टेलीफोन का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। यह 44% वार्षिक की दर से बढ़ रहा है। टेलीफोन कॉल तीन प्रकार की होती है। स्थानीय Local, ग्राहक ट्रंक डायलिंग STD और अन्तर्राष्ट्रीय ग्राहक ट्रंक डायलिंग ISD, टेलीफोन में STD देश के किसी भी कोने में एवं ISD में विदेश में सीधे नम्बर मिलाकर बात कर सकते हैं।

●

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर दिसम्बर, 2011

कक्षा–12वीं

विषय–अर्थशास्त्र

सेट-3

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

नोट–सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

निर्देश— (i) सभी प्रश्नों के सामने अंक निर्धारित है। 1 अंक वाले प्रश्न का उत्तर आवश्यकतानुसार एक या दो शब्दों में दीजिए। 4 अंक वाले प्रश्न का उत्तर 60 शब्दों में एवं 6 अंकों वाले प्रश्नों का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

(ii) प्रश्न क्रमांक 1 से 22 तक 1 अंक, प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक 4 अंक, प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक 6 अंक वाले प्रश्न हैं।

(iii) प्रश्न क्रमांक 23 से 38 तक प्रत्येक प्रश्न में विकल्प का प्रावधान है।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

प्रश्न 1. उपभोक्ता की आय ---------- को प्रभावित करती है।

(माँग, माँग के विस्तार)

उत्तर—माँग।

प्रश्न 2. मांग का अनिवार्य तत्व ---------- है।

(दुर्लभ वस्तु, इच्छा)

उत्तर—इच्छा।

प्रश्न 3. करेंसी नोट ---------- जारी करता है।

(रिजर्व बैंक, वित्त मंत्रालय)

उत्तर—रिजर्व बैंक।

प्रश्न 4. एक रुपये के नोट में -------

(वित्त मंत्री, रिजर्व बैंक के गर्वनर)

उत्तर—वित्त मंत्री।

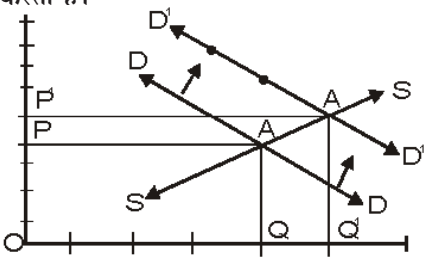

प्रश्न 5. वर्ग की दो सीमाओं के अंतर को कहते हैं।

(आवृत्ति, वर्गान्तर)

उत्तर—वर्गान्तर!

कौन-सा कथन सत्य है और कौन-सा असत्य

प्रश्न 6. शिक्षक द्वारा पढ़ाना उत्पादन है।

उत्तर—सही

प्रश्न 7. टिकाऊ वस्तुओं में कच्चा माल शक्ति होता है।

उत्तर—सही।

प्रश्न 8. आर्थिक नियोजन का उद्देश्य उत्पादन में वृद्धि करना होता है।

उत्तर—सही।

प्रश्न 9. भारतीय योजना आयोग की प्रथम अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा गांधी थीं।

उत्तर—गलत।

प्रश्न 10. बहुवचन में सांख्यिकी से अभिप्राय सांख्यिकी विधियों से है।

उत्तर—गलत।

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 11. दो पूंजीगत वस्तुओं के नाम लिखिए।

उत्तर—मशीन एवं खनिज

प्रश्न 12. राष्ट्रीय बीज निगम की स्थापना कब की गई ?

उत्तर—सन् 1963 में।

प्रश्न 13. उद्यमी से मिलने वाली राशि, जो उसे उत्पादन इकाई को अपनी सेवाएं देने के बदले में मिलती है, क्या कहलाती है ?

उत्तर—लाभ।

प्रश्न 14. निर्यात का नाम लिखिए जो विदेशों में किए गए निवेश की एक माप है।

उत्तर—शुद्ध निर्यात।

प्रश्न 15. निर्यात अर्जित करने के दो स्रोत का नाम लिखिए।

उत्तर—विदेशी मुद्रा तथा विदेशी निवेश।

प्रश्न 16. भारतीय किसान पारस्परिक तौर पर किस खाद का प्रयोग करता है ? नाम लिखिए।

उत्तर—गोबर खाद।

प्रश्न 17. सरकार के स्वामित्व वाले उद्यम का नाम लिखिए।

उत्तर—सार्वजनिक उपक्रम।

प्रश्न 18. यदि निवेश 3 करोड़ रु. से अधिक हो तो आने वाले उद्योग के नाम लिखिए।

उत्तर—लघु उद्योग।

प्रश्न 19. जल परिवहन के दो प्रकार के नाम लिखिए।

उत्तर—स्टीमर एवं जल जहाज।

प्रश्न 20. भारत में इस समय कितने हवाई अड्डे हैं ?

उत्तर—85 हवाई अड्डे।

प्रश्न 21. गैर-परम्परागत क्षेत्र में आने वाले दो उर्जा स्रोतों के नाम लिखिए।

उत्तर—सूर्य, हवा।

प्रश्न 22. भारत में कोयले का उत्पादन करने वाले दो राज्यों के नाम लिखिए।

उत्तर—बिहार और पश्चिम बंगाल।

निर्देश—निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 23. संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग से क्या आशय है ? लिखिए।

उत्तर—जब किसी संसाधन का उपयोग विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए किया जाता है तो उसे संसाधनों का वैकल्पिक उपयोग कहते हैं। जब किसी संसाधन का उपयोग किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन के लिए किया जाता है, तो वह अन्य वस्तु या सेवा उत्पादन के लिए उपलब्ध नहीं रहता है। इससे संसाधनों के उपयोग में चयन की समस्या उत्पन्न होती है।

जैसे कोई श्रमिक खेत में काम कर रहा है तो वह कारखाने में काम नहीं कर सकता है।

अथवा

प्रश्न—अर्थ व्यवस्था की मूलभूत समस्याएँ क्या हैं ? लिखिए।

उत्तर—अर्थ व्यवस्था की मूलभूत समस्याएँ—1. संसाधनों की दुर्लभता—संसाधनों की दुर्लभता से आशय साधनों की सीमितता से है। हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो वस्तुएँ या सेवाएँ खरीदते हैं, वे अर्थव्यवस्था में उत्पादित होती हैं। इनका उत्पादन करने के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधनों की आवश्यकता होती है, जैसे—मानवीय संसाधन, प्राकृतिक संसाधन और मनुष्य द्वारा निर्मित संसाधन अर्थात पूंजी।

2. संसाधनों का वैकल्पिक प्रयोग—इसी वर्ष का प्रश्न क्रमांक 23 देखें।

प्रश्न 24. भारतीय अर्थव्यवस्था की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक 23 (अथवा) देखें।

अथवा

प्रश्न—आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि में अन्तर बताइये।

उत्तर—आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि में अन्तर

आर्थिक विकास	आर्थिक वृद्धि
यह प्रेरित एवं असतत प्रकृति वाला परिवर्तन है।	यह स्वाभिक, क्रमिक एवं स्थिर गति वाला परिवर्तन है।
यह व्यापक अवधारणा है।	यह संकुचित अवधारणा है।
यह प्रावैगिक सन्तुलन का एक रूप है।	यह स्थैतिक संतुलन की एक अवस्था है।
यह अर्द्धविकसित देशों की समस्याओं से सम्बन्ध है।	इसका सम्बन्ध विकसित देशों से होता है।
उत्पादन में वृद्धि के साथ तकनीकी एवं संस्थागत परिवर्तन का होना आवश्यक है।	उत्पादन में वृद्धि होना ही आर्थिक वृद्धि है।

प्रश्न 25. व्यष्टि अर्थशास्त्र के दो प्रकारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर— व्यष्टि अर्थशास्त्र के प्रकार

1. व्यष्टि स्थैतिकी—इसमें किसी दी हुई समयावधि में संतुलन की विभिन्न सूक्ष्म मात्राओं के पारस्परिक सम्बन्धों की व्याख्या की जाती है। इस विश्लेषण में यह मान लिया जाता है कि संतुलन की स्थिति एक निश्चित समय बिन्दु से सम्बन्धित होती है और उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है।

2. तुलनात्मक सूक्ष्म स्थैतिकी—तुलनात्मक सूक्ष्म स्थैतिकी विश्लेषण विभिन्न समय बिन्दुओं पर विभिन्न संतुलनों का तुलनात्मक अध्ययन करता है । किन्तु यह नये एवं पुराने संतुलन के मध्य के संक्रमण काल पर प्रकाश नहीं डालता है। यह तुलना तो करता है लेकिन यह नहीं बताता है कि नया संतुलन किस क्रिया से उत्पन्न हुआ है।

अथवा

प्रश्न—व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में चार अंतर लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट -1 का प्रश्न क्रमांक-24 (अथवा) देखें।

प्रश्न 26. पूर्ति के नियम के चार अपवाद कौन-कौन से हैं ? लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट -2 का प्रश्न क्रमांक-23 (अथवा) देखें।

अथवा

प्रश्न—रेखाचित्र द्वारा दिखाइये कि वस्तु की मांग और पूर्ति में परिवर्तन का बाजार संतुलन पर कैसे असर पड़ता है ?

उत्तर—वस्तु की मांग और पूर्ति में परिवर्तनों के बाजार में संतुलन कीमत पर प्रभाव का रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शन—

वस्तु की मांग में वृद्धि या कमी अन्य कारकों जैसे वस्तुओं की कीमतों, क्रेता की आय और उनकी रुचि आदि में परिवर्तनों के कारण होती है। इसी प्रकार वस्तु की पूर्ति में वृद्धि या कमी अन्य कारकों जैसे कि अन्य वस्तुओं की कीमतों, उत्पादन के साधनों की कीमतों, उत्पादक के उद्देश्यों और उत्पादन की तकनीकी में परिवर्तन के कारण होता है। यहाँ हम तीन प्रकार की स्थितियों का अध्ययन करेंगे—

(1) पूर्ति के अपरिवर्तित रहने पर, माँग में वृद्धि/कमी का कीमत पर प्रभाव।

(2) माँग के अपरिवर्तित रहने पर, पूर्ति में वृद्धि/कमी का कीमत पर प्रभाव।

(3) माँग और पूर्ति दोनों में एक साथ परिवर्तनों का कीमत पर प्रभाव।

(i) **माँग में वृद्धि का कीमत पर प्रभाव—रेखाचित्र**—माँग में वृद्धि से संतुलन कीमत और मात्रा दोनों में बढ़ जाता है।

रेखाचित्र–

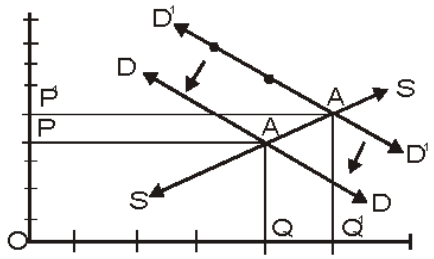

रेखाचित्र–A

(ii) **माँग में कमी का कीमत पर प्रभाव**–जब माँग में कमी होती है तो संतुलन कीमत और संतुलन मात्रा दोनों कम हो जाती है।

रेखाचित्र–

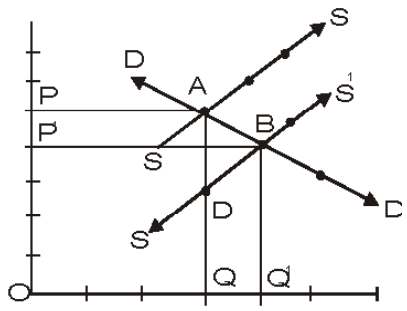

रेखाचित्र–B

(iii) **पूर्ति में वृद्धि का कीमत पर प्रभाव**–माँग अनुसूची के अपरिवर्तित रहने पर, जब वस्तु की पूर्ति में वृद्धि होती है तो संतुलन कीमत घट जाती है और संतुलन की मात्रा बढ़ जाती है।

रेखाचित्र–

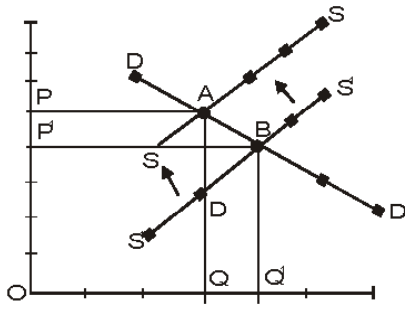

रेखाचित्र–C

(iv) पूर्ति में कमी का कीमत पर प्रभाव–पूर्ति में कमी से वस्तु की संतुलन कीमत बढ़ है।

रेखाचित्र–

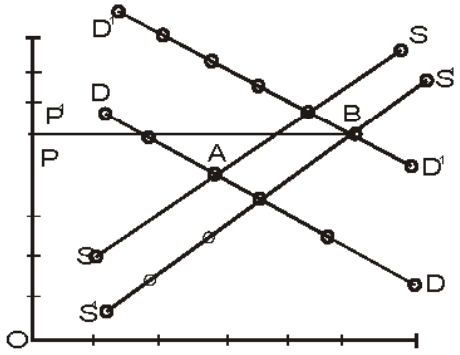

रेखाचित्र–**D**

(v) माँग और पूर्ति दोनों में कमी/वृद्धि पर प्रभाव–

रेखाचित्र–

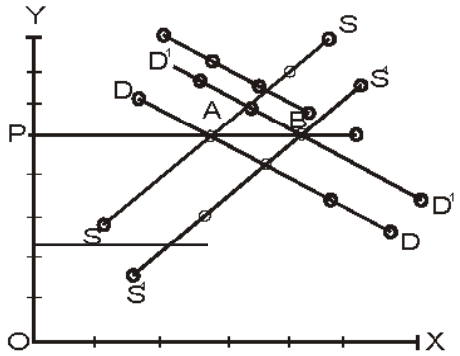

रेखाचित्र–**E**

रेखाचित्र–

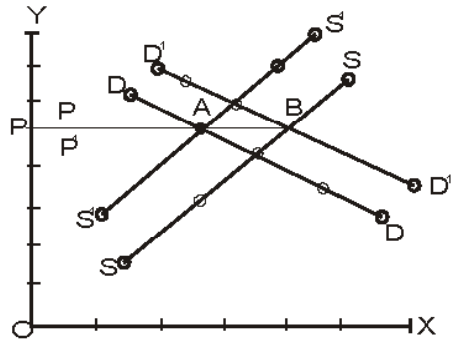

रेखाचित्र–**F**

रेखाचित्र–

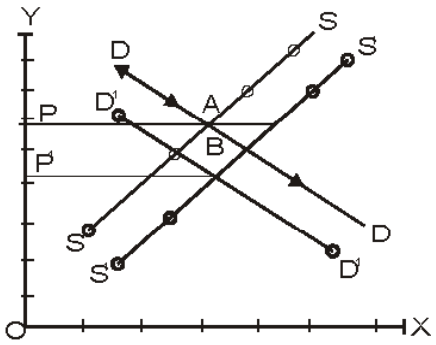

रेखाचित्र–G

(v) **माँग में कमी (/ वृद्धि) और पूर्ति में वृद्धि (/ कमी) का कीमत पर प्रभाव–**

रेखाचित्र–

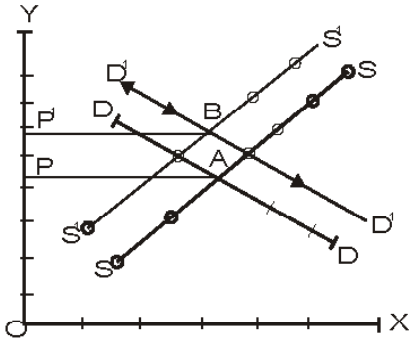

रेखाचित्र–माँग में कमी और पूर्ति में वृद्धि का कीमत पर प्रभाव–

$$\sum P_0 = 420$$

प्रश्न 27. समान्तर माध्य के दो गुण व दो दोष लिखिए।

उत्तर–समान्तर माध्य के गुण एवं दोष–

1. **गुण–**(i) गणना करने में सरल होता है।

(ii) यह सदैव निश्चित एवं दृढ़ होता है।

2. दोष– (i) इसमें प्रत्येक मूल्य को समान महत्व दिया जाता है जिससे परिणाम भ्रम. ात्मक हो सकते हैं।

(ii) यह अवास्तविक संख्याएँ होती हैं।

(iii) इसका चित्रों के द्वारा प्रदर्शन संभव नहीं है।

अथवा

प्रश्न–दर एवं अनुपात में अन्तर लिखिए।

उत्तर– दर एवं अनुपात में अन्तर–

यद्य" दर और अनुपात को निकालने की विधि समान है, परन्तु दर जो अर्थ व्यक्त करती

है वह अनुपात से कुछ भिन्न होता है।

दर को प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है और अनुपात को इकाई के रूप में व्यक्त किया जाता है।

प्रश्न 28. आय प्रवाह के कोई दो चरणों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर— **आय प्रवाह के चरण**

1. **परिवार एवं फर्म के मध्य वस्तुओं का प्रवाह**—किसी भी अर्थव्यवस्था के दो क्षेत्र होते हैं—प्रथम क्षेत्र साधनों की पूर्ति तथा द्वितीय क्षेत्र साधनों की मांग करता है। प्रथम क्षेत्र को गृहस्थ क्षेत्र कहा जाता है तथा द्वितीय क्षेत्र फर्म होती है। फर्म विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को उत्पादित करने के लिए परिवारों से साधनों की मांग करता है। फर्म इन साधनों को वस्तुओं के रूप में पारिश्रमिक का भुगतान करती है। वह मुद्रा का उपयोग नहीं होगा।

2. **परिवार एवं फर्म के मध्य मुद्रा का प्रवाह**—वर्तमान अर्थव्यवस्था में मुद्रा का प्रादुर्भाव हो गया है। अब सभी साधनों को उनकी सेवाओं के बदले मुद्रा के रूप में पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है। परिवार, फर्म को साधनों की पूर्ति करता है। परिवार इन मुद्राओं के बदले मुद्रा का भुगतान करती है। परिवार इन मुद्राओं से विभिन्न फर्मों से वस्तुओं और सेवाओं को क्रय करते हैं। इस प्रकार अर्थव्यवस्था में निरंतर मुद्रा का प्रवाह चलता रखता है।

अथवा

प्रश्न—परिवार, फर्म, सरकार तथा शेष विश्व के बीच आय-प्रवाह की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—वर्तमान आर्थिक व्यवस्था अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार ही है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की अवस्था में प्रत्येक देश कुछ वस्तुओं एवं सेवाओं का आयात करते हैं तथा कुछ का निर्यात करते हैं। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से आय का प्रवाह बढ़ता है और आय का सृजन भी होता है।

अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र द्वारा आय का सृजन किया जाता है। प्रत्येक साधन कुछ न कुछ आय प्राप्त करते हैं तथा उसे व्यय भी करते हैं। इस प्रकार एक व्यक्ति या एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में मुद्रा का प्रवाह निरंतर चलता रहता है।

प्रश्न 29. भुगतान शेष खाता की वर्तमान स्थिति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भुगतान शेष खाते का अर्थ—भुगतान शेष का अर्थ देश के समस्त आयातों एवं निर्यातों तथा अन्य सेवाओं के मूल्यों के संपूर्ण विवरण से होता है जो कि एक निश्चित अवधि के लिए बनाया जाता है। इसके अन्तर्गत लेनदेन के दो पक्ष होते हैं। एक ओर लेनदारियों का विवरण होता है जिसे धनात्मक पक्ष कहते हैं और दूसरी ओर देनदारियों का विवरण होता है, इसे ऋणात्मक पक्ष कहते हैं।

भुगतान शेष खाता की वर्तमान स्थिति अर्थात चालू खाता यह व्यापार शेष एवं अदृश्य खाता दोनों को मिलाकर बनता है। अर्थात व्यापार शेष और अदृश्य शेष को जोड़ने से हमें चालू खाता का शेष मिलता है। भारत में चालू खाता सदैव ऋणात्मक रहा है।

अथवा

प्रश्न—व्यापार शेष को परिभाषित कर भारत के संदर्भ में व्यापार शेष को

समझाइये।

उत्तर—व्यापार शेष—वस्तुओं के आयात और निर्यात के मूल्यों के अन्तर को व्यापार शेष कहते हैं।

भारत के संदर्भ में शेष—व्यापार शेष को व्यापार संतुलन के नाम से जाना जाता है। व्यापार शेष में केवल वस्तुओं के निर्यात और आयात को ही शामिल किया जाता है।

भारत का व्यापार शेष—निम्न तालिका में वर्ष 2003-04 से भारत के व्यापार शेष की स्थिति दिखाई गई है—

वर्ष	निर्यात	आयात	व्यापार शेष
2003-04	63.9	78.82	—14.3
2004-05	83.5 (30.8	111.5 (42.7)	—28.0
2005-06	103.1 (23.4)	149.2 (33.8)	—46.1
2006-07	126.4 (22.6)	185.8 (25.5)	—59.4
2007-08	111.0 (21.6)	168.5 (25.9)	—57.8
2008-09	168.7 (51.9)	287.8 (70.8)	— 119.1

प्रश्न 30 . व्यापार नीति में सुधार की आवश्यकता क्यों पड़ी ? लिखिए।

उत्तर—विदेशी वस्तुओं से प्रतियोगिता न होने के कारण भारतीय उत्पादक अपने बाजार में कुछ भी बेच लेते थे। वे वस्तु की गुणवत्ता पर बिना ध्यान दिये वस्तु का उत्पादन करने लगे जिसके पीछे कारण यह था कि आयात नियन्त्रण के कारण विदेशी वस्तुएँ बाजार में महंगी दामों पर उपलब्ध थी जो आम लोगों की पहुँच से बाहर थीं। इस तरह देखा जाय तो आय पर नियन्त्रण की नीति देश के लिए बहुत हितकर सिद्ध नहीं हुई। देश की साख विश्व बाजारों में घटने लगी। देश के पास ऋणों के भुगतान के लिए साधन नहीं थे। इस बात का डर था कि वही देश अपने विदेशी कर्जों की देनदारी में चूक न कर जाये।

अथवा

प्रश्न—भारत की नई व्यापार नीति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—नई व्यापार नीति में बड़े नीतिगत परिवर्तन किए गए हैं जो इस प्रकार से हैं—

1. आयात लाइसेंस का उदारीकरण—नई व्यापार नीति में आयात लाइसेंस को उदार बनाया गया है। नकारात्मक सूची को छोड़कर शेष सभी वस्तुओं को आयात लाइसेंस से मुक्त कर दिया गया।

2. सीमा शुल्क के ढांचे में सुधार—नई व्यापार नीति के अन्तर्गत आयात सीमा शुल्क की दरों में निरन्तर कमी की जा रही है। वर्ष 1997 तक आयात शुल्क की अधिकतम दर लगभग आधी जबकि औसत शुल्क की दर एक चौथाई रह गई थी।

3. विनिमय दर प्रबन्धन में सुधार—मार्च, 1993 में विनिमय दर की दोहरी प्रणाली समाप्त कर दी गई। केवल बाजार निर्धारित विनिमय दर ही रह गई।

4. नई व्यापार नीति के तहत सार्वजनिक क्षेत्र की व्यापार ऐसेजेंसियों की भूमिका में

कमी आई है।

प्रश्न 31. भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर को रोकने के चार उपाय लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक 31 (अथवा) देखिये।

अथवा

प्रश्न—भारत में जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न चार समस्या को लिखिए।

उत्तर—सेट-1 का प्रश्न क्रमांक 31 देखिये।

प्रश्न 32. सरकारी बजट के प्रमुख घटकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—सभी सरकारी बजटों का स्वरूप लगभग एक समान होता है। सरकारी बजट के दो भाग/घटक हैं—

(1) प्राप्तियाँ—प्राप्तियाँ के दो भाग हैं—(अ) राजस्व प्राप्तियाँ, (ब) पूँजीगत प्राप्तियाँ।

व्याख्या—

(अ) राजस्व प्राप्तियाँ—कर, सरकार की आय का परम्परागत स्रोत रहा है, सरकार ने उत्पादन प्रक्रिया में सीधे भाग लेना शुरू कर दिया है, उसने अपने उद्योग खोले हैं जिन्हें सार्वजनिक उद्योग कहा जाता है; जैसे—भारतीय रेलवे, राष्ट्रीयकृत बैंक, राज्य व्यापार निगम, इंडियन एयरलाइंस आदि। सरकारी राजस्व प्राप्तियों का एक और स्रोत है, वह है—सरकार को विदेशों से अनुदान भी मिल सकते हैं। इन सभी स्रोतों को राजस्व प्राप्तियाँ कहते हैं। इन्हें दो वर्गों में बाँटा गया है—

(1) कर राजस्व, (2) करेत्तर राजस्व।

(ब) पूँजीगत प्राप्तियाँ—केन्द्रीय सरकार के पूँजीगत प्राप्तियों के तीन मुख्य स्रोत हैं—

(i) ऋण,

(ii) ऋणों की वूसली,

(iii) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के शेयरों की पुनः बिक्री।

व्याख्या—(i) **ऋण**—केन्द्रीय सरकार द्वारा ऋण प्राप्त करने के दो साधन हैं—

(क) घरेलू ऋण, (ख) विदेशी सहायता।

(ii) ऋणों की वसूली—केन्द्रीय सरकार देश में राज्य व स्थानीय सरकारों को ऋण देती है। इन ऋणों की वापस वसूली केन्द्रीय सरकार की पूँजीगत प्राप्तियाँ मानी जाती हैं।

(iii) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के शेयरों की पुनः बिक्री—यह पूँजीगत प्राप्तियों का एक स्रोत है। पूर्व में इसका निवेश केन्द्रीय सरकार ही करती थी। वर्ष 1991 में इसका निजीकरण कर दिया। इस नीति के अधीन सरकार ने इन उद्यमों के शेयरों को आम जनता और वित्तीय संस्थाओं को बेचना शुरू कर दिया, जिसे 'शेयर अनिवेश' कहा जाता है।

(2) व्यय—सरकार बजट के दो भाग हैं—

(अ) पूँजीगत व्यय और राजस्व व्यय, (ब) योजना व्यय और गैर-योजना व्यय।

व्याख्या—(अ) पूँजीगत व्यय और राजस्व व्यय—परिसम्पत्तियों पर होने वाला व्यय पूंजीगत व्यय कहलाता है। पूंजीगत व्यय भवन, सड़क, पुल, नहरें आदि के निर्माण पर व पूँजीगत सामान आदि पर होता है।

राजस्व व्यय वह होता है जो परिसम्पत्तियों के अलावा अन्य मदों; जैसे–वेतन, मरम्मत आदि पर व्यय किया जाता है।

(ब) योजना व्यय और गैर-योजना व्यय–योजनाओं में प्राथमिकताओं के आधार पर सरकारी बजट में प्रतिवर्ष व्यय का प्रावधान किया जाता है। ऐसे प्रावधानों को योजना व्यय कहते हैं।

सरकार देश का प्रशासन चलाने के लिए भी दिन-प्रतिदिन के व्यय का प्रावधान करती है। ऐसे प्रावधानों को गैर-योजना व्यय कहते हैं।

अथवा

प्रश्न–बजट घाटा पूरा करने के वित्तीय स्रोतों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–सेट-1 का प्रश्न क्रमांक 26 (अथवा) देखें।

प्रश्न 33. भारत में संतुलित क्षेत्रीय विकास की प्रगति पर समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए।

उत्तर–आर्थिक नियोजन देश के विभिन्न प्रदेशों और राज्यों में समानता लाने में असफल रहा है। आर्थिक नियोजन का लाभ केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित रहा है। गांवों तक यह योजनाएँ नहीं पहुँच पायी हैं।

देश में प्रति व्यक्ति औसत आय के मामले में चंडीगढ़ का प्रथम स्थान है तथा इस मामले में दूसरा व तीसरा स्थान क्रमश: दिल्ली व गोवा का है।

अत: यह स्पष्ट है कि भारत में आर्थिक नियोजन के उद्देश्य पूरे नहीं हुए हैं। आज भी हमारा ध्यान देशी-विदेशी सहायताओं पर निर्भर है। भारत पर बहुराष्ट्रीय घाटा, भुगतान संतुलन की समस्या, कीमतों में लगातार वृद्धि, विकास की धीमी गति आर्थिक नियोजन की असफलता को प्रदर्शित करते हैं।

अथवा

प्रश्न–भारत में आर्थिक नियोजन की कमियाँ लिखिए।

उत्तर–भारत में आर्थिक नियोजन की कमियाँ निम्नलिखित हैं–

1. तेज आर्थिक संवृद्धि का उद्देश्य अप्राप्त–भारत अपनी राष्ट्रीय आय को कुछ सीमा तक बढ़ाने में सफल रहा है किन्तु यह वृद्धि आशातीत नहीं हुई है।

2. आर्थिक असमानता दूर करने का लक्ष्य अप्राप्त–भारत अपनी आर्थिक योजनाओं में देश की आर्थिक असमानताओं को दूर करने के लक्ष्य निर्धारित करता रहा है किन्तु आज भी देश के 34% लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करते हैं।

3. आत्म-निर्भरता का उद्देश्य अप्राप्त–देश अपनी खाद्यान्नों की आवश्यकता स्वयं पूरा करता है। लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था आज भी विदेशी ऋणों पर निर्भर करती है।

4. बेरोजगारी की समस्या यथावत्–भारत में आर्थिक नियोजन की सबसे बड़ी समस्या बेरोजागारी के क्षेत्र में व्याप्त असफलता है।

5. संतुलित क्षेत्रीय विकास का लक्ष्य अप्राप्त–आर्थिक नियोजन देश के विभिन्न प्रदेशों और राज्यों में समानता लाने में असफल रहा है।

प्रश्न 34. निम्न समंकों को सरल समूही रीति द्वारा सन् 1987 को आधार मानकर सन् 1992 के लिए निर्देशांक की रचना कीजिए–

वस्तुएँ	A	B	C	D	E
1987 में मूल्य (रु.)	40	50	80	100	150
1992 में मूल्य (रु)	50	50	100	120	160

हल—आधार वर्ष 1987 = P_0

चालू वर्ष 1992 = P_1

सरकारी समूही रीति द्वारा निदेशांक की गणना—

वस्तुएँ	1987 में मूल्य = P0	1992 में मूल्य = P_1
A	40	50
B	50	50
C	80	100
D	100	120
E	150	160
		$\frac{\sum P_1}{\sum P_0} \times 100$
योग	$\sum P_1 = 480$	

सूत्रानुसार—

वर्ष (1992) के लिए निर्देशांक $P_{01} = \sum P_{01}$

यहाँ पर $\sum P_0 = 420,$ = ?

$$\sum P_1 = 480 \quad \sum P_{01} = \frac{480}{420} \times 100$$

मान रखने पर

$\therefore$

$$\sum P_{01} = 114 \cdot 04$$

इस प्रकार स्पष्ट है कि 1987 की तुलना में 1992 में वस्तुओं की कीमतों में शुद्ध 14.04 (114.04–100) प्रतिशत की वृद्धि हुई है। **उत्तर**

अथवा

प्रश्न—सूचकांक का अर्थ और तीन मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट -2 का प्रश्न क्रमांक–27 (अथवा) देखें।

प्रश्न 35. राष्ट्रीय आय मापने के तीन मुख्य चरण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—सेट–2 का प्रश्न क्रमांक–35 (अथवा) देखें।

अथवा

प्रश्न—देश के राष्ट्रीय आय अनुमान के कोई चार उपयोग लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट -1 का प्रश्न क्रमांक–35 देखें।

प्रश्न 36. विकासशील देशों में ऊँची जनसंख्या वृद्धि दर का प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों पर पड़ने वाले प्रभाव को लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट -2 का प्रश्न क्रमांक-30 देखें।

अथवा

प्रश्न—आयु के आधार पर जनसंख्या की संरचना की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट -1 का प्रश्न क्रमांक-36 देखें।

प्रश्न 37. उद्योगों की कृषि पर निर्भरता के चार प्रकार लिखकर संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट -1 का प्रश्न क्रमांक-37 देखें।

अथवा

प्रश्न—कृषि का उद्योगों पर निर्भरता के चार प्रकार लिखकर संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट -1 का प्रश्न क्रमांक-37 (अथवा) देखें।

प्रश्न 38. कृषि वित्त के संस्थागत स्रोतों के नाम लिखकर किसी एक की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

उत्तर—कृषि वित्त के संस्थागत स्रोतों के नाम हैं—

(i) वाणिज्यक बैंक,

(ii) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक,

(iii) राष्ट्रीय कृषि व ग्रामीण बैंक

(iv) सहकारी ऋण समितियाँ।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक—वर्ष 1975 में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना की गई। इस समय भारत में 23 राज्यों में लगभग 196 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक हैं, जिसकी लगभग 15,000 शाखाएँ हैं।

उद्देश्य—(1) छोटे व सीमांत किसानों को ऋण देना।

(2) किसान, कारीगरों व छोटे उद्यमकर्त्ताओं से जमा करवाना।

इन बैंकों पर कृषि व ग्रामीण विकास करना और संबंधित उद्योगों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरी करने की जिम्मेदारी है। प्रत्येक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक जिला स्तर पर कार्य करता है।

अथवा

प्रश्न—शिक्षा की चार प्रमुख आवश्यकताएँ लिखकर संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर—शिक्षा की आवश्यकता के कारण निम्नलिखित हैं—

(1) जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदलने में सहायक—शिक्षा से मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। पढ़ा-लिखा व्यक्ति अंधविश्वास से बच सकता है।

(2) लोगों की गुणवत्ता में वृद्धि करने में सहायक—शिक्षा से कौशल एवं योग्यता का विकास होता है।

(3) स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन—शिक्षा से लड़के एवं लड़की में भेदभाव के प्रति दृष्टिकोण बदलता है।

(4) महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन—महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन आया है चाहे वह औपचारिक तौर पर शिक्षा मिली हो या न मिली हो, वे रेडियो, टेलीविजन के माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

(5) महिलाओं का रोजगार के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन—शिक्षा से महिलाओं का रोजागार के प्रति दृष्टिकोण बदला है। वे भी अपने कैरियर के प्रति जागरूक हैं।

(6) आधुनिक तकनीक अपनाने में सहायक—एक शिक्षित व्यक्ति आधुनिक विचारों को शीघ्रता से अपना सकता है।

(7) जनसंख्या नियन्त्रण में सहायक—शिक्षा के कारण छोटे परिवार के महत्व को समझने लगे हैं। परिवार नियोजन को समझने लगे हैं।

(8) अंधविश्वास को दूर करने में सहायक—शिक्षा अंधविश्वास को दूर करने में सहायता करती है। साक्षरता अभियान एवं अंधविश्वास उन्मूलन के कार्यक्रम द्वारा अंधविश्वास कम हुआ है।

●

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर मई-जून, 2011

कक्षा–12वीं

विषय-अर्थशास्त्र

सेट-4

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

नोट–सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

निर्देश— (i) सभी प्रश्नों के सामने अंक निर्धारित है। 1 अंक वाले प्रश्न का उत्तर आवश्यकतानुसार एक या दो शब्दों में दीजिए। 4 अंक वाले प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में एवं 6 अंकों वाले प्रश्नों का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

(ii) प्रश्न क्रमांक 1 से 22 तक 1 अंक, प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक 4 अंक, प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक 6 अंक वाले प्रश्न हैं।

(iii) प्रश्न क्रमांक 23 से 38 तक प्रत्येक प्रश्न में विकल्प का प्रावधान है।

सही विकल्प चुनकर लिखिए

1. प्रथम पंचवषीय योजना प्रारम्भ हुई–

(a) 1951 (b) 1956 (c) 1961 (d) 1966

उत्तर–(a) 1951.

2. नवीनतम् अनुपातों के अनुसार लगभग कितना प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे हैं ?

(a) 25% (b) 36% (c) 46% (d) 56%

उत्तर–(b) 36%.

3. साधारण दण्ड रेखाचित्र होते हैं–

(a) चार प्रकार के (b) तीन प्रकार के

(c) दो प्रकार के (d) चार प्रकार के

उत्तर–(c) दो प्रकार के।

4. जल परिवहन के प्रकार हैं–

(a) 2 (b) 3 (c) 4 (d) 5

उत्तर–(a) 2

5. भूमि के उसी टुकड़े पर अधिक उत्पादन करना कृषि कहलाता है–

(a) आर्द्र (b) शुष्क (c) विस्तृत (d) गहन।

उत्तर—(d) गहन।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

प्रश्न 6. आर्थिक विकासपूर्ण रोजगार ..... है।

उत्तर—पर्यायवाची।

प्रश्न 7. आर्थिक नियोजन से ..... का व्यापक विकास हुआ है।

उत्तर—उद्यागों का।

प्रश्न 8. टिप्पणी सारणी के ..... आती है।

उत्तर—नीचे।

प्रश्न 9. शुद्ध निर्यात विदेशों में किए गए ..... का एक माप है।

उत्तर—निवेश।

प्रश्न 10. कोयला ..... स्रोत है।

उत्तर—परम्परागत।

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एकवाक्य में दीजिए—

प्रश्न 11. मछली पकड़ना किस क्षेत्र का व्यवसाय है ? नाम लिखिए।

उत्तर—प्राथमिक क्षेत्र।

प्रश्न 12. विदेश विनियोग अर्जित करने के महत्वपूर्ण स्रोत का नाम लिखिए।

उत्तर—निर्यात।

प्रश्न 13. अदृश्य मदों से प्राप्तियों और इन मदों पर किये भुगतान के अंतर को क्या कहते हैं ?

उत्तर—अदृश्य शेष।

प्रश्न 14. दो पूँजीगत वस्तु के नाम लिखिए।

उत्तर—पूंजीगत वस्तुएं—मशीन एवं खनिज।

प्रश्न 15. दूसरे देशों से वस्तुएँ खरीदना क्या कहलाता है ? नाम लिखिए।

उत्तर—आयात।

प्रश्न 16. विनिमय दर की दोहरी प्रणाली कब समाप्त कर दी गई ?

उत्तर—मार्च 1993 को।

प्रश्न 17. किस खाते में रुपयों की परिवर्तनीयता ने निर्यातकों का उत्साह बढ़ाया है ?

उत्तर—चालू खाते।

प्रश्न 18. व्यापारिक कृषि के दो नाम लिखिए।

उत्तर—कपास एवं जूट।

प्रश्न 19. राष्ट्रीय बीज निगम की स्थापना कब की गई।

उत्तर—सन् 1963।

प्रश्न 20. मध्यम पैमाने के दो उद्योगों के नाम लिखिए।

उत्तर—चीनी एवं रेशम वस्त्र उद्योग।

प्रश्न 21. जल परिवहन में आने वाले दो यातायात साधन का नाम लिखिए।

उत्तर—जल जहाज एवं स्टीमर।

प्रश्न 22. भारत में यूरेनियम की कमी या अधिकता है, नाम लिखिए।

उत्तर—कमी।

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 160 शब्दों में दीजिए—

प्रश्न 23. मुद्रा पूर्ति को प्रभावित करने वाले चार तत्वों को लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-25 देखें।

अथवा

प्रश्न—वाणिज्य बैंकों के ऋण देने की प्रक्रिया लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-25 (अथवा) देखें।

प्रश्न 24. भारतीय अर्थव्यवस्था की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-23 (अथवा) देखें।

अथवा

प्रश्न—आर्थिक विकास की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का क्रमांक-23 देखें।

प्रश्न 25. बजटीय नीति के चार प्रमुख उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-26 देखें।

अथवा

प्रश्न—बजट घाटा को पूरा करने के दो वृत्तीय स्रोतों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-26 (अथवा) देखें।

प्रश्न 26. व्यक्तिगत तथा बाजार मांग तालिका में चार अंतर लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-24 (अथवा) देखें।

अथवा

व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में चार अन्तर लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-24 देखें।

प्रश्न 27. एक देश में कच्चे तेल का उत्पादन निम्न प्रकार है—

वर्ष	उत्पादन (लाख रु. में)
1990-91	106
1991-92	162
1992-93	211
1993-94	260
1994-95	290
1995-96	302

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर काल श्रेणी रेखाचित्र बनाइये।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-28 देखें।

अथवा

1990-93 में लघु उद्योगों का विक्रय मूल्य निम्न प्रकार है—

वर्ष	उत्पादन (लाख रु. में)
1990	300
1991	400
1992	560
1993	720

उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर सरल दण्ड रेखाचित्र बनाइये।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-28 (अथवा) देखें।

प्रश्न 28. भारतीय अर्थव्यवस्था की चार समस्याएँ लिखिए।

उत्तर—सेट-1 प्रश्न क्रमांक-27 देखें।

अथवा

प्रश्न—विदेशी व्यापार नीति में सुधार के चार प्रभाव लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-27 (अथवा) देखें।

प्रश्न 29. भारत में विदेशी व्यापार नीति में सुधार के चार प्रभाव लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-30 देखें।

अथवा

प्रश्न—भारतीय व्यापार नीति के आयात नियन्त्रण के चार उपाय लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-30 (अथवा) देखें।

प्रश्न 30. भारत में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर के कारण उत्पन्न चार समस्याओं को लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-31 देखें।

अथवा

प्रश्न—भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर को रोकने के चार उपाय लिखि।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-31 (अथवा) देखें।

प्रश्न 31. चार साधन आय का संक्षेप में अर्थ लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-29 देखें।

अथवा

प्रश्न—मिश्रित आय का अर्थ लिखकर, इस अवधारणा को समझाइये।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-29 (अथवा) देखें।

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 32. पूर्ति वक्र से क्या अभिप्राय है ? रेखाचित्र द्वारा समझाइये।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-33 देखें।

अथवा

प्रश्न—मांग आधिक्य से क्या अभिप्राय है ? रेखाचित्र द्वारा इसकी कीमत पर पड़ने वाले प्रभाव समझाइये।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-33 (अथवा) देखें।

प्रश्न 33. अर्थव्यवस्था की तीन मूलभूत क्रियाओं की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-32 देखें।

अथवा

प्रश्न—आर्थिक क्रियाओं के बीच पारस्परिक तीन सम्बन्ध लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-32 (अथवा) देखें।

प्रश्न 34. औद्योगिक बैंक एवं वाणिज्य बैंक में चार अन्तर लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-38 देखें।

अथवा

प्रश्न—भारत की शिक्षा प्रणाली में कमियों को दूर करने के चार उपाय लिखिए।

उत्तर—सेट-1 प्रश्न क्रमांक-38 (अथवा) देखें।

प्रश्न 35. उद्योगों का कृषि पर निर्भरता के चार कारण लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-37 देखें।

अथवा

प्रश्न—कृषि का उद्योगों पर निर्भरता के चार कारण लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-37 (अथवा) देखें।

प्रश्न 36. देश के राष्ट्रीय आय अनुमान के कोई चार उपयोग लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-35 देखें।

अथवा

राष्ट्रीय आय विभिन्न देशों के बीच तुलना करने में सहायक है। व्याख्या कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-35 (अथवा) देखें।

प्रश्न 37 आयु एवं लिंग के आधार पर भारत की जनसंख्या की संरचना की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-36 देखें।

अथवा

प्रश्न—भारत के अन्तर-प्रदेशीय विभिन्नताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—सेट-1 का प्रश्न क्रमांक-36 (अथवा) देखें।

प्रश्न 38. दी गई सूचनाओं का प्रयोग करके अप्रत्यक्ष विधि द्वारा समांतर माध्य ज्ञात कीजिए—

प्राप्तांक (x)	**आवृत्ति (f)**
4	6
5	3
6	2
7	3
8	4
9	2

उत्तर—सेट-1 प्रश्न क्रमांक-34 देखें।

अथवा

प्रश्न—वर्ष 1995 में A, B, C वस्तुओं की कीमतें क्रमशः 05, 07 और 03 रुपये थीं। वर्ष 1996 में वह बढ़कर 52, 08 और 05 रुपये हो गईं। सरल समूही विधि के द्वारा बताइये कि कीमत में औसत वृद्धि कितनी हुई ?

उत्तर—सेट-1 प्रश्न क्रमांक-34 (vFkok) ns[ksaA

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा
सॉल्व्ड पेपर, 2010

कक्षा–12वीं
विषय–अर्थशास्त्र
सेट-5

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश : सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

1. प्रश्न 1 से 22 तक रिक्त स्थान, सही/गलत एवं एक वाक्य वाले प्रश्न हैं। (प्रत्येक पर अंक -1)
2. प्रश्न क्रमांक 23 से लेकर 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। शब्द सीमा अधिकतम 60 शब्द। (प्रत्येक पर अंक -4)
3. प्रश्न क्रमांक 32 से लेकर 38 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। अधिकतम शब्द सीमा 125 शब्द। (प्रत्येक पर अंक -6)

खाली स्थान भरिए

प्रश्न 1. भारतीय अर्थव्यवस्था ..... अर्थ व्यवस्था है
(विकसित, विकासशील)

उत्तर—विकासशील।

प्रश्न 2. वस्तु की मांग एवं पूर्ति दोनों ..... पर सदैव बराबर होते हैं। (साम्य, असाम्य)

उत्तर—साम्य।

प्रश्न 3. राष्ट्रीय नियोजन समिति का गठन..... के नेतृत्व में किया गया।
(पं. जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी)

उत्तर—पं. जवाहरलाल नेहरू।

प्रश्न 4 किसी भी देश में आय का प्रवाह..... प्रक्रिया के समय होता है। (मजदूरी, उत्पादन),

उत्तर—उत्पादन।

प्रश्न 5. नदियां, तालाब आदि ..... जल के स्रोत हैं। (भूमिगत, सतही)

उत्तर—सतही।

नोट-प्रत्येक कथन के सामने सही/गलत का चयन कर लिखिए—

प्रश्न 6. करेंसी नोट का निर्गमन राज्य सरकार द्वारा किया जाता है।

उत्तर—गलत।

प्रश्न 7. आँकड़े संख्यात्मक रूप में व्यक्त किए जाते हैं।

उत्तर—सही।

प्रश्न 8. निर्यात एवं आयात दोनों ही विदेशी व्यापार में शामिल नहीं होते हैं।

उत्तर–गलत।

प्रश्न 9. उद्योग प्राथमिक व्यवसाय हैं।

उत्तर–गलत।

प्रश्न 10 भारतीय यूनिट ट्रस्ट की स्थापना सन् 1964 में हुई

उत्तर–सही।

नोट- एक वाक्य में उत्तर दीजिए-

प्रश्न 11. उत्पत्ति के कितने साधन होते हैं?

उत्तर– पांच।

प्रश्न 12 एक व्यक्ति द्वारा एक निश्चित समय मांगी गई तालिका को कहते हैं।

उत्तर–व्यक्तिगत मांग तालिका।

प्रश्न 13. वह मुद्रा जो व्यक्ति अपनी इच्छा से स्वीकार करता है, कहलाती है।

उत्तर–ऐच्छिक मुद्रा।

प्रश्न 14. प्रथम पंचवर्षीय योजना कब प्रारंभ हुई।

उत्तर–1 अप्रैल 1951 को।

प्रश्न 15. वर्ग की दो सीमाओं के अन्तर को क्या कहते हैं ?

उत्तर–वर्गान्तर।

प्रश्न 16 भारतीय अर्थव्यवस्था को कितने वर्गों में बांटा गया है ?

उत्तर– तीन वर्गों में।

प्रश्न 17 जब एक देश दूसरे देश के साथ व्यापार करता है, तो वह व्यापार क्या कहलाता है?

उत्तर– विदेशी व्यापार।

प्रश्न 18. भूमि के उसी टुकड़े पर अधिक उत्पादन करना कौन-सी कृषि का प्रकार है ?

उत्तर–गहन कृषि।

प्रश्न 19. वर्तमान में टेलीफोन किस प्रकार की सुविधा है ?

उत्तर–संचार सुविधा।

प्रश्न 20. किस प्रक्रिया द्वारा मनुष्य वस्तुएं आदि एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाते हैं।

उत्तर–परिवहन प्रक्रिया।

प्रश्न 21. कौन-सा परिवहन सबसे सस्ता परिवहन है?

उत्तर–रेल परिवहन।

प्रन 22 सहकारी ऋण समितियों का ढांचा कितने स्तर का होता है?

उत्तर–तीन स्तर।

प्रश्न 23. मांग के किन्हीं चार आवश्यक तत्वों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–मांग के आवयक तत्व निम्नलिखित हैं-

1. इच्छा-मांग कहलाने के लिए उपभोक्ता की इच्छा का होना आवश्यक है। अन्य इच्छा की उपस्थिति के बावजूद यदि उपभोक्ता उस वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा नहीं करता है तो उसे मांग नहीं कहते।

2. साधन- मांग कहलाने के लिए मनुष्य की इच्छा के साथ पर्याप्त धन का होना आवश्यक है।

3. तत्परता- मांग कहलाने के लिए मनुष्य के मन में इच्छा व उस इच्छा की पूर्ति के लिए पर्याप्त साधन के साथ-साथ उस धन या साधन को उस इच्छा की पूर्ति के लिए व्यय करने की तत्परता होनी चाहिए।

4. निश्चित मूल्य-किसी उपभोक्ता के द्वारा मांगी जाने वाली वस्तु का सम्बन्ध यदि कीमत से नहीं किया गया तो उस स्थिति में मांग का आशय पूर्ण नहीं होगा।

अथवा

प्रश्न—व्यक्तिगत एवं बाजार मांग तालिका में अंतर बताइये।

उत्तर—सेट—1 का प्र. क्र. 24 देखिये।

प्रश्न 24 उत्पादन संभावना वक्र को तालिका व रेखाचित्र द्वारा संक्षिप्त में समझाइये।

उत्तर—उत्पादन सम्भावना वक्र -मानाकि अपने संसाधनों में दो वस्तुएं कपड़ा एवं गेहूँ ही उत्पादित करने का निर्णय लेती है। यह निम्न तालिका से स्पष्ट है—

उत्पादन के सम्भावित संयोग	गेहूं (लाख क्विंटल)	कपड़ा (करोड़ मीटर)
A	0	10
B	1	9
C	2	7
D	3	4
E	4	0

उपर्युक्त तालिका में बिन्दु A यह दर्शाता है कि यदि अर्थव्यवस्था अपने सभी सीमित संसाधनों का प्रयोग गेहूं उत्पादन के लिये करती है तो वह 10 लाख क्विंटल गेहूं का उत्पादन कर सकती है। बिन्दु B यह दर्शाता है कि गेंहूं का उत्पादन कम कर कपड़ा उत्पादन कर सकती है।

रेखाचित्र-

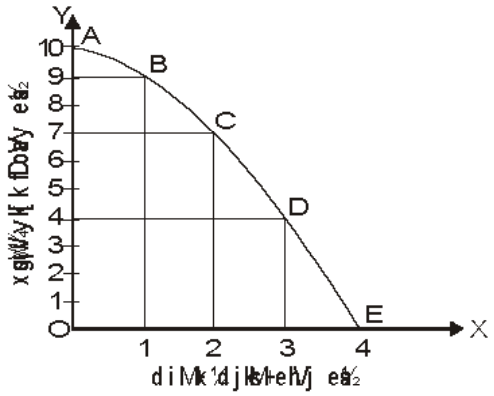

उपभोक्त रेखाचित्र में AE सम्भावना वक्र है। जब उत्पादन सम्भावना वक्र पर बिन्दु A से E की तरफ जाते हैं, तो अर्थव्यवस्था गेंहूं उत्पादन में से संसाधनों को हटाकर कपड़े के उत्पादन में लगाती है। बिन्दु A गेहूं और कपड़े के उत्पादन का पहला संयोग है जो 10 लाख क्विंटन गेहूं का उत्पादन कर सकता है। बिन्दु B उत्पादन का दूसरा संयोग है जो 1 करोड़ मीटर और 9 लाख क्विंटन

गेंहू का उत्पादन कर सकता है। इसी प्रकार C, D और E उत्पादन के वैकल्पिक संभावित संयोगों के बिन्दुओं को दर्शाती है। जिनका उत्पादन अर्थव्यवस्था में दिये गये सभी संसाधनों के सम्पूर्ण व कुशलतम उपयोग से कर सकती है।

अथवा

प्रश्न–अर्थव्यवस्था की मूलभूत समस्याओं को कारण सहित समझाइये।

उत्तर–सेट 3 का प्रश्न क्रमांक -23 (अथवा) देखें।

प्रश्न 25 व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर बताइये।

उत्तर–सेट 1 का प्रश्न क्रमांक -24 (अथवा) देखें।

अथवा

प्रश्न–मांग वक्र को समझाइये।

उत्तर–मांग तालिका का रेखीय चित्रण ही मांग वक्र कहलाता है।

रेखाचित्र-

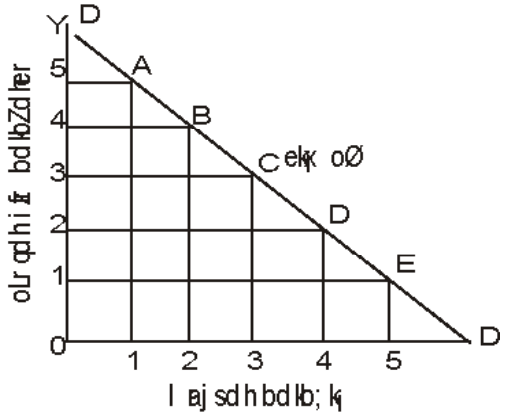

स्पष्टीकरण–उपर्युक्त रेखाचित्र में, OX आधार पर संतरे की इकाइयां और OY लम्ब रेखा पर संतरे की प्रति इकाई कीमत को दिखाया गया है। DD मांग वक्र है जो A BCD एवं E बिन्दुओं को जोड़ते हुए खींचा गया है। DD मांग वक्र में स्थित प्रत्येक बिन्दु विभिन्न कीमतों पर वस्तु को खरीदी जाने वाली मात्रा को बताती है।

उदाहरण– A बिन्दु पर संतरे की प्रति इकाई कीमत 5 रुपये होने पर उपभोक्ता संतरे की 1 इकाई खरीदता है जबकि E बिन्दु पर वह संतरे की कीमत प्रति इकाई 1 रुपये होने पर 5 इकाइयां खरीदता है। इससे स्पष्ट होता है कि जब संतरे की कीमत घट जाती है तब उसकी मांग बढ़ जाती है अत: मांग वक्र का ढाल ऋणात्मक होता है।

प्रश्न 26 भारतीय अर्थव्यवस्था की चार विशेषताओं को समझाइये।

उत्तर –सेट 1 का प्रश्न क्रमांक -23 (अथवा) देखें।

अथवा

प्रश्न-सकल निवेश व निवल निवेश में अंतर समझाइये।

उत्तर–सकल निवेश व निवल निवेश में अन्तर–

उत्पादन कार्य को सूचारु रूप से चलाने के लिए चल और अचल सम्पत्ति पर धन को लगाया जाता है। प्राय: 1 वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुएं उसी वर्ष में उपभोग नहीं की जाती हैं बल्कि उत्पादन हेतु मशीन, उपकरण, कच्चा माल आदि का क्रय किया जाता है। इसे ही सकल निवेश कहते हैं।

अचल पूंजी के मूल्य में उनके प्रयोग से होने वाली टूट-फूट संभावित अप्रचलन के कारण होने वाली कमी हो मूल्य ह्रास कहते हैं। यदि सकल निवेश में मूल्य ह्रास को घटा दें तो निबल निवेश प्राप्त होता है।

प्रश्न 27 आंकड़ों की विशेषताओं को समझाइये।

उत्तर—आंकड़ों की विशेषताएं निम्नलिखित हैं—

1. आंकड़े तथ्यों का समूह हैं—एक अकेला अंक आंकड़ा नहीं है, क्योंकि किसी भी समस्या पर प्रकाश नहीं डालता है, जैसे मृत्यु की संख्या, विद्यार्थियों के प्राप्तांक आदि।

2. संख्यात्मक रूप में व्यक्त किये जाते हैं—आंकड़ों को अंकों और मात्राओं में व्यक्त किये जाते हैं; जैसे—भारत की जनसंख्या 1951 में 36.1 करोड़ से बढ़कर 1991 में 84.6 करोड़ हो गई। भारत में मृत्युदर 27.4 से घटकर 1991 में 9.8 प्रति हजार रह गई।

3. निश्चित उद्देश्य—आंकड़ों का संकलन किसी पूर्व निश्चित उद्देश्य के अनुसार होना चाहिए। बिना अद्देश्य के उपलब्ध आंकड़े एक संख्या मात्र रह जाता है।

4. यथोचित शुद्धता—आंकड़ों का संग्रह करते समय अथोचित मात्रा में शुद्धता आवश्यक है।

अथवा

प्रश्न—सारणी कितने प्रकार की होती हैं? समझाइये।

उत्तर— सारणी के प्रकार—

1. सामान्य उद्देश्य सारणी—यह सारणी प्राय: बड़े आकार की होती है जिसमें काफी आंकड़े दिये गए होते हैं। यह एक प्रकार से आंकड़ों का भण्डार होती है। भारत सरकार तथा इसके विभागों द्वारा प्रस्तुत सारणियां सामान्य उद्देश्य प्रकार की होती हैं। ऐसी सारणी से हम छोटी-छोटी सारणियां प्राप्त कर सकते हैं।

2. विशेष उद्देश्य सारणी—यह सारणी छोटी होती है तथा इसे हम सामान्य उद्देश्य से प्राप्त कर सकते हैं। इसका उद्देश्य किसी विशेष पहलू को उजागर करना होता है, उनकी सहायता से हम किसी पहलू पर कोई विशेष उत्तर पाते हैं।

प्रश्न 28 निम्नलिखित आंकड़ों से आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना कीजिए—

मद	रुपये में
कर्मचारियों का वेतन	50,000
किराया	10,000
लाभ	2,000
ब्याज	1,500
निवेश	10,000

हल- आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना—

कर्मचारियों का वेतन + किराया + लाभ + ब्याज = 50,000 + 10,000 + 2,000 + 1,500

= 63,500

अथवा

प्रश्न–परिवार व फर्म के मध्य आय के प्रवाह को रेखाचित्र द्वारा समझाइये।

उत्तर–सेट-3 का प्रश्न क्रमांक 28 (अथवा) के उत्तर का बिंदु नं. 2 देखें।

प्रश्न 29. विदेशी व्यापार के महत्व को संक्षेप में समझाइये।

उत्तर–विदेशी व्यापार के महत्व को आयात और निर्यात के संदर्भ में नियमानुसार समझा जा सकता है-

(अ) आयात का महत्व–आयात किसी भी देश के लिए निम्नांकित प्रकार से महत्वपूर्ण है–

(i) जीवन स्तर को बढ़ाने के लिए। (ii) अर्थव्यवस्था के विकास में सहायक ।

(iii) उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार। (iv) आवश्यक वस्तुओं की कमी को पूरा करना।

(ब) निर्यात का महत्व–देश के लिए निर्यात का निम्नांकित महत्व है–

(i) अर्थव्यवस्था के विकास में सहायक। (ii) आय एवं रोजगार में वृद्धि।

(iii) संसाधनों का उचित उपयोग। (iv) उद्योगों का विस्तार।

अथवा

प्रश्न–भुगतान शेष को समझाइये।

उत्तर–उत्तर हेतु सेट-3 प्रश्न क्रमांक -29 देखिए।

प्रश्न 30. नई व्यापार नीति में जो नीतिगत परिवर्तन किए गए हैं, उनका संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।

उत्तर–उत्तर हेतु सेट-3 प्रश्न क्रमांक -30 (अथवा) देखिए।

अथवा

प्रश्न–उन उपायों का वर्णन कीजिए जिससे आयात पर नियंत्रण किया जा सके।

उत्तर–आयात नियंत्रण के उपाय–

1. आयात लाइसेंस–आयात लाइसेंस की प्रक्रिया जटिल थी और आयात के लिए लाइसेंस अनिवार्य था।

2. सीमा शुल्क–आयात पर अधिक मात्रा में सीमा शुल्क लगाया गया ताकि विदेशी वस्तुएँ देश में महँगी हो और लोग इसे खरीदने में रुचि न लें।

3. आयात कोटा–आयात के लिए एक सीमा निर्धारित कर दी गई जिससे अधिक आयात नहीं किया जा सकता था।

4. आयात पर प्रतिबन्ध–गैर-आवश्यक वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

प्रश्न 31. जनसंख्या के घनत्व से क्या आशय है ?

उत्तर–जनसंख्या के घनत्व से आशय–

प्रति किलोमीटर व्यक्तियों की औसत संख्या जनसंख्या का घनत्व कहलाती है। जनसंख्या का घनत्व, कुल जनसंख्या को कुल भू-क्षेत्रफल से भाग करके ज्ञात किया जाता है।

अर्थात–

$$\text{निर्भरता अनुपात} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल भू-क्षेत्रफल}}$$

किसी भी देश का क्षेत्रफल सीमित होता है। अत: जनसंख्या में वृद्धि होने पर जनसंख्या का घनत्व बढ़ता है।

अथवा

प्रश्न—शहरी व ग्रामीण जनसंख्या से क्या आशय है?

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-2 का प्रश्न क्रमांक 30 (अथवा) देखें।

प्रश्न 32. ''मुद्रा विनिमय का माध्यम है।'' समझाइये।

उत्तर—मुद्रा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य विनिमय का माध्यम है। वस्तु और सेवाओं का विनिमय प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं तथा सेवाओं में न होकर मुद्रा के माध्यम से होता है। मुद्रा के कारण मनुष्य को अपना समय और शक्ति ऐसे दूसरे व्यक्ति की खोज करने में नष्ट करने की आवश्यकता नहीं रही है जिसके पास उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ हैं और अपनी उन वस्तुओं के बदले में उन दूसरी वस्तुओं को स्वीकार करने को तैयार है जो उस पहले मनुष्य के पास है। फलत: मुद्रा के विनिमय के कार्य को बहुत ही सरल एवं सहज बना दिया है।

अथवा

प्रश्न—प्राथमिक एवं सांकेतिक मुद्रा में अंतर बनाइये। (कोई छ:)

उत्तर— प्राथमिक एवं सांकेतिक मुद्रा में अंतर

प्राथमिक मुद्रा	सांकेतिक मुद्रा
1. यह सहायक मुद्रा होती है।	1. यह देश की प्रमुख मुद्रा होती है।
2. इसका अंकित मूल्य उसके यथार्थ मूल्य से अधिक होता है।	2. इसका अंकित तथा यथार्थ मूल्य बराबर होता है।
3. यह सीमित विधिग्राह्य होती है।	3. यह असीमित विधि ग्राह्य होती है।
4. इसकी ढलाई स्वतंत्र नहीं होती है।	4. इसकी ढलाई स्वतंत्र रूप से होती है।
5. इस मुद्रा में वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य निर्धारित होता है।	5. इस मुद्रा में ही समस्त वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य निर्धारित होता है।
6. यह घटिया या हल्की किस्म की धातुओं से निर्मित होती है।	6. इस मुद्रा को स्वर्ण, रजत या इनके मिश्रण से तैयार किया जाता है।

प्रश्न 33.आर्थिक नियोजन के आर्थिक उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—आर्थिक नियोजन के आर्थिक उद्देश्य—

1. उत्पादन में वृद्धि—आर्थिक नियोजन का प्रमुख उद्देश्य देश में उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का समुचित उपयोग कर उत्पादन की मात्रा में अधिकतम वृद्धि करना होता है।

2. **आय की समानता**—पूँजीवाद के पतन व समाजवाद के विकास ने इस उद्देश्य को अधिक परिपक्वता प्रदान की है। आज विश्व के प्रत्येक देश का समाज के विभिन्न वर्गों में आय की समानता बनाये रखना आर्थिक नियोजन का मुख्य उद्देश्य बन गया है।

3. साधनों का उचित उपयोग—आर्थिक नियोजन का मुख्य उद्देश्य देश में उपलब्ध संसाधनों का उचित उपयोग कर उत्पादन को बढ़ाना है।

4. अवसर की समानता–अवसर की समानता का अर्थ है देश की समस्त कार्यशील जनसंख्या को जीविकोपार्जन के समान अवसर प्रदान करना।

5. संतुलित विकास–सम्पूर्ण राष्ट्र के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए देश के अविक. सित भागों का विकास करना अत्यंत आवश्यक है।

6. पूर्ण रोजगार–आर्थिक विकास और पूर्ण रोजगार पर्यायवाची हैं। जिस प्रकार बढ़ते हुए रोजगार का प्रत्येक सुअवसर राष्ट्रीय लाभांश में वृद्धि करता है ठीक उसी प्रकार आर्थिक विकास के फलीभूत होने पर ही रोजगार के नये सुअवसर प्राप्त होते हैं। आर्थिक नियोजन का उद्देश्य अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार को प्राप्त करना होता है।

अथवा

प्रश्न–योजना आयोग के कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–योजना आयोग की स्थापना का सुझाव दिसंबर, 1946 में दिया गया जिसके आधार पर 15 मार्च, 1950 को योजना आयोग की स्थापना की गई। जिसके प्रथम अध्यक्ष तात्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू बने।

योजना आयोग के कार्य–

1. देश के भौतिक, अभौतिक, पूँजीगत एवं मानवीय संसाधनों का अनुमान लगाना।

2. राष्ट्रीय संसाधनों का अधिकतम संभव विदोहन एवं प्रयोग के लिए रणनीति बनाना।

3. प्राथमिकताओं का निर्धारण करना एवं संसाधनों का प्राथमिकता के आधार पर आबंटन करना।

4. योजना के सकल संचालन के लिए संभावित अवरोधों को दूर करने के उपाय सरकार को बताना।

5. योजनावधि में विभिन्न चरणों पर योजना प्रगति का मूल्यांकन करना।

6. समय-समय पर केन्द्रीय और राज्य सरकारों को आवश्यकता पड़ने पर परामर्श देना।

प्रश्न 34. निम्नलिखित आंकड़ों की सहायता से अप्रत्यक्ष विधि का प्रयोग कर समान्तर माध्य की गणना कीजिए–

प्राप्तांक	4	5	6	7	8	9
आवृत्ति	6	3	2	3	4	2

हल–उत्तर हेतु सेट-1 प्रश्न क्रमांक -34 देखिए।

अथवा

प्राप्तांक	10	20	30	40	50	60
आवृत्ति	4	3	5	2	3	3

हल–अप्रत्यक्ष विधि से समान्तर माध्य की गणना–

प्राप्तांक	आवृत्ति (f)	कल्पित माध्य A–30 = dx	आवृत्ति व विचलनों का गुणनफल ($f\,dx$)
10	4	–20	–80
20	3	–10	–30
30	5	0	0
40	2	10	20
50	3	20	60
60	3	30	90
	$\Sigma f = 20$		Σfdx=60

$$\bar{X} = A + \frac{\Sigma\, fdx}{N}$$

$$\bar{X} = 30 + \frac{60}{20}$$

$$\bar{X} = 30 + 3$$

$$X = 33$$

उत्तर

प्रश्न 35. मूल्य वृद्धि की अवधारणा को समझाइये।

उत्तर– **मूल्य वृद्धि की अवधारणा का अर्थ**

जब उत्पादन मूल्य में मध्यवर्ती लागत को घटाया जाता है तो उससे प्राप्त अंतर को मूल्यवृद्धि कहते हैं।

मूल्य वृद्धि को मापने का यह तरीका सकल मूल्य वृद्धि कहलाता है। मूल्य वृद्धि मापने के सकल और बाजार कीमत शब्दों का अर्थ जानने के लिए सकल और शुद्ध माप तथा बाजार कीमत और साधन लागत मापों के बारे में जानना होगा–

सकल और शुद्ध माप–उत्पादन के लिए स्थिर पूँजीगत पदार्थों; जैसे–मशीन, भवन आदि की आवश्यकता होती है। किसी पदार्थ का जीवनकाल सीमित होता है। जैसे मशीनों का जीवनकाल सीमित होता है तथा उनमें घिसावट होती है। जिससे उसका मूल्य गिरने लगता है। इस घिसावट को स्थिर पूँजी का उपभोग कहा जाता है। यह हम मूल्य वृद्धि में से स्थिर पूँजी को घटाये तो मूल्य वृद्धि सकल मूल्य कहलाती है। यदि सकल पूंजी में से स्थिर पूंजी का उपभोग घटा दें तो हमें शुद्ध मूल्य वृद्धि ज्ञात हो जाती है।

अत: शुद्ध मूल्य वृद्धि = सकल मूल्य वृद्धि – स्थिर पूंजी का उपभोग

बाजार कीमत और साधन लागत माप–इसमें अंतर अप्रत्यक्ष कर और आर्थिक सहायता के कारण होता है।

(i) अप्रत्यक्ष कर– बिक्रीकर, उत्पादन शुल्क, चुंगी आदि अप्रत्यक्ष कर कहलाता है।

(ii) आर्थिक सहायता–यह अप्रत्यक्ष कर से विपरीत है

बाजार कीमत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि में से अप्रत्यक्ष कर को घटाकर तथा आर्थिक सहायता

को जोड़कर साधन लागत पर मूल्य वृद्धि ज्ञात किया जाता है।

(साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि) = (बाजार कीमत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि) – (अप्रत्यक्ष कर) + आर्थिक सहायता

अथवा

प्रश्न–चालू मूल्यों एवं स्थिर मूल्यों पर राष्ट्रीय आय की गणना किस प्रकार की जाती है?

उत्तर–1.चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय–चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय से आशय उस आय से है जो एक वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य से हैं । अत: चालू कीमतों पर शुद्ध साधन आय को राष्ट्रीय आय कहते हैं। किसी वर्ष में राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने के लिए उस वर्ष के भौतिक उत्पादन को उसी वर्ष की कीमतों से गुणा करना होता है। उदाहरण के लिए वर्ष 1996 की कीमतों से गुणा करना होगा।

2 . स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय–स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय से आशय उस आय से है जो स्थिर कीमतों पर एक अर्थव्यवस्था की संवृद्धि का अध्ययन करने के लिए आवश्यक हो। अत: स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय अधिक उचित रहती है।

यदि हम वर्ष 1996 के उत्पादन का मूल्य वर्ष 1991 की कीमतों पर लगाये तो राष्ट्रीय आय का यह माप स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय कहलाता है। व्यवहार में राष्ट्रीय आय का अनुमान पहले चालू कीमतों पर जाता है और फिर उसे कीमत सूचकांक की सहायता से स्थिर कीमतों में बदला जाता है। स्थिर कीमतों पर अनुमान चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय के अनुमान को कीमत सूचकांक से भाग करके ज्ञात किया जाता है। कीमत सूचकांक को 1 वर्ष के लिए चुना जाता है। यह वर्ष आधार वर्ष कहलाता है।

प्रश्न 36 जनसंख्या की समस्याओं का संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।

उत्तर–उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक 31 देखिए।

अथवा

प्रश्न–बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–उत्तर हेतु सेट-1 का प्रश्न क्रमांक 31 (अथवा) देखिए।

प्रश्न 37. भारतीय कृषि की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) भारतीय जनसंख्या की जीविका का साधन–भारत की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि से आजीविका प्राप्त करती है।

(2) खाद्यान्न फसलों की प्रमुखता–भारत में लगभग 80 प्रतिशत क्षेत्र खाद्यान्न फसल व शेष व्यापारिक फसलों के काम में लाया जाता है।

(3) छोटी जोत–भारत में कृषि जोतों का आकार छोटा है। यहाँ के जोतों का औसत आकार लगभग 2 हैक्टेयर है जबकि विदेशों में जोतों का आकार भारत से कई गुना ज्यादा है।

(4) निम्न कृषि उत्पादकता–भारतीय कृषि की उत्पादकता बहुत कम है जो कि प्रति हैक्टेयर एवं प्रतिश्रमिक दोनों की दृष्टि से कम है, क्योंकि यहाँ परम्परागत तरीके से कृषि की जाती है।

(5) उत्पादन की परम्परागत तकनीक–भारतीय कृषि की उत्पादकता अधिकांश परम्प.

रागत तरीके से होती है। वर्तमान में अधिकांश क्षेत्रों में हल द्वारा ही खेती की जाती है। नई तकनीक का उपयोग बहुत कम होता है। जोतों के आकार छोटा होने के कारण भी टेक्टर द्वारा कृषि करना कठिन होता है।

(6) मानसून पर निर्भरता—भारत में आज भी कृषि मानसून पर निर्भर है। कुल कृषि भूमि का 30 प्रतिशत ही सींचित क्षेत्र है, शेष मानसून पर निर्भर है।

अथवा

प्रश्न—भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्योगों के महत्व को समझाइये।

उत्तर—किसी भी देश की प्रगति वहाँ के औद्योगिक विकास पर निर्भर करती है। हमारी अर्थव्यवस्था में उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसके कारण निम्नलिखित हैं—

(1) उद्योगों द्वारा उपभोक्ता हेतु वस्तु निर्माण—विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है; जैसे— कपड़ा, लोहा, "न, साबुन, टी.वी., कार, बस, पेन आदि उपभोक्ता हेतु निर्मित की जाती हैं।

(2) उत्पादन इकाइयों के लिये वस्तुओं का निर्माण—कई उद्योग उत्पादन इकाइयों के लिए वस्तुओं, दवाइयाँ, फसल काटने के औजार आदि।

(3) सेवाओं के उत्पादन में सहायक—पोस्टकार्ड, परिवहन के साधन, कम्प्यूटर, शिक्षा सेवाओं हेतु पुस्तक आदि का निर्माण उद्योगों के द्वारा किया जाता है।

(4) देश की आत्मनिर्भरता—देश में उद्योग होने से हमें विदेशों पर निर्भर नहीं होना पड़ता। इसलिये देश में ही वस्तुएं बनाकर देश को आत्मनिर्भर बनाते हैं।

(5) उद्योग रोजगार प्रदान करते हैं—उद्योगों से कई लोगों को जीविका कमाने हेतु रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। 1990-91 में लगभग 5 करोड़ से अधिक लोग उद्योगों में कार्यरत हैं।

(6) उद्योग निर्यात को बढ़ाते हैं—उद्योगों का निर्यात की दृष्टि से भी महत्व है। उद्योगों के द्वारा ही हमारा निर्यात सम्भव होता है। जेवरात, मशीनें, औजार, हाथ की वस्तुएँ, चाय आदि का निर्यात किया जाता है।

(7) प्राकृतिक साधनों का दोहन—प्राकृतिक रूप से उपलब्ध साधन हर देश में पाये जाते हैं जिसमें कृषि योग्य भूमि, खनिज, वन आदि हैं। औद्योगिक वस्तुएँ; जैसे—मशीनें आदि इन संसाधनों का प्रयोग करने में सहायता करते हैं, जैसे—कृषि के क्षेत्र में ट्रेक्टर शीघ्रता से कार्य करते हैं।

प्रश्न 38 जल परिवहन के महत्व को समझाइये।

उत्तर—जल परिवहन का निम्नलिखित महत्व है—

1. सस्ता साधन—जल परिवहन का सबसे सस्ता साधन है। क्योंकि जल मार्ग प्रकति की देन है इसमें न सड़कें बनानी पड़ती है न ही पटरी बिछानी पड़ती है। इस साधन में अधिक व्यय नहीं करना पड़ता है।

2. बड़ी क्षमता—जलयान की भार खींचने की क्षमता रेल या सड़क परिवहन से अधिक होती है। इसमें अपने भार की छः गुना अधिक खींचने की क्षमता होती है।

3. विदेशी व्यापार की जननी—यह परिवहन विदेशी व्यापार के जनक माने जाते हैं।

इसी माध्यम से विदेशी व्यापार का विकास हुआ। इसमें कम लागत पर अधिक समान ढोया जाता है। जल परिवहन की सुविधा के कारण विभिन्न देशों की निर्मित वस्तुओं का उपयोग आसानी से किया जाता है।

4. प्रदूषण से मुक्त–परिवहन का यह रूप कम प्रदूषण फैलाता है। इससे न तो ढेर सारा धुआं निकलता है और न ही वायु प्रदूषित होती है।

5. राष्ट्रीय सुरक्षा–राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से जलमार्ग अत्यंत महत्वपूर्ण है। शत्रु के देश द्वारा पुलों, रेलमार्गों को नष्ट किया जा सकता है।

6. एकमात्र साधन–जल परिवहन कुछ क्षेत्रों के लिए एक मात्र साधन है; जैसे पहाड़ी ढालों; घने वनों, बर्फीले स्थानों पर जलमार्ग ही एक मात्र साधन है, जिससे यात्री व माल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जा सकता है।

अथवा

प्रश्न–रेलमार्ग की तीन समस्याएँ व तीन महत्व लिखिए।

उत्तर–रेलमार्ग की समस्याएँ–

(1) रेल दुर्घटनाएँ–रेलों की होने वाली दुर्घटनाओं के कारण रेल विभाग बदनाम होता है। इससे भारी जान-माल की हानि होती है।

(2) मौसमी बाधाएँ–भारत में कभी बाढ़ आ जाती है तो रेलवे लाइनें बह जाती हैं, पुल टूट जाते हैं, जिससे रेल मार्ग लम्बे समय तक बंद हो जाते हैं। प्रशासन को करोड़ों रुपये की हानि होती है।

(3) सुविधाओं का अभाव–रेलों में व स्टेशनों में शौलालय, पानी पंखे, छाया आदि अपर्याप्त है। रेल डिब्बों में टूट-फूट, पंखों का गायब होना आदि समस्याएँ हैं।

रेल का महत्व–

1. कृषि की सहायता–रेल ने कृषि के विकास में सहायता की है। रेल आने के पहले कृषक अपनी उपज केवल स्थानीय बाजार में बेचता था। रेलवे ने कृषि वस्तुओं का बाजार फैला दिया है।

2. व्यापार का विस्तार–रेलवे ने सभी प्रकार की वस्तुओं के व्यापार को बढ़ाया है। मछली, अण्डा, फलों और सब्जियों का व्यापार रेल यातायात के कारण बढ़ा है।

3. श्रम की गतिशीलता–नौकरी-पेशा व व्यापार में लगे लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाकर रेलवे ने काफी सहायता की है। द्रुतगामी रेल से लोग मुम्बई से पुणे प्रतिदिन जाकर वापस अपने घर पहुंचते हैं।

●●